प्रश्नोत्तर पर्व

लघूत्तरीयाः प्रश्नाः

1. दर्शनशव्दस्य कोऽर्थः ?

उ. √दृश् + अनट् प्रत्ययनिष्पण्णः दर्शनशव्दः। दर्शनपेदन अन्तर्दर्शनम्, तत्त्वदर्शनम् वोध्यते न तु चाक्षुषदर्शनम्।

১। প্রশ্নঃ- 'দর্শন' কথার অর্থ কি?

উঃ- √দৃশ্ + অনট্ প্রত্যয়নিষ্পন্ন দর্শন শব্দ। 'দর্শন' বলতে অন্তর্দর্শন বা তত্ত্বদর্শনকে বেঝায়, চাক্ষুষ দর্শনকে নয়।

2. भारतीयदर्शनस्य कौ तावद् विभागौ?

उ. भारतीयदर्शनस्य द्वौ विभागौ स्तः- आस्तिकं नास्तिकञ्चेति।

২। প্রশ্নঃ-ভারতীয়দর্শনের কয়টি ও কি কি ভাগ?

উঃ- ভারতীয় দর্শনের দুটি ভাগ- আস্তিক ও নাস্তিক দর্শন।

3. आस्तिकः नाम कः ?

उ. 'अस्ती'ति वुद्धिर्यस्य स आस्तिकः। वेदस्य प्रामाण्ये यः विश्वसति सः आस्तिकः।

৩। প্রশ্নঃ- 'আস্তিক' কি?

উঃ- 'অস্তি' বিশিষ্টবুদ্ধি আস্তিক। বেদের প্রামাণ্যে যাঁরা বিশ্বাস করেন তাঁরা আস্তিক।

4. नास्तिकः नाम कः ?

उ. 'नास्ती'ति वुद्धिर्यस्य स नास्तिकः। वेदस्य प्रामाण्ये यः न विश्वसति सः नास्तिकः।

৪। প্রশ্নঃ- 'নাস্তিক' কি?

উঃ- 'নাস্তি' বুদ্ধি বিশিষ্ট নাস্তিক, বেদের প্রামাণ্যে যাঁরা বিশ্বাস করেন না তাঁরা 'নাস্তিক'।

5. कानि तावद् आस्तिकदर्शनानि?

उ. सांख्यम् योग: न्यायम् वैशेषिकम् मीमांसा, वेदान्तश्चेति षड्दर्शनानि आस्तिकपदवाच्यानि भवन्ति।

৫। প্রশ্নঃ- আস্তিক দর্শন কয়টি ও কি কি?

উঃ- আস্তিক দর্শন ছয়টি-সাংখ্য, যোগ, ন্যায়, বৈশেষিক, মীমাংসা ও বেদান্ত।

6. कानि तावद् नास्तिकदर्शनानि?

उ. चार्वाक्दर्शनम् वौद्धदर्शनम्, जैनदर्शनञ्चेति नास्तिकदर्शनानि।

৬। প্রশ্নঃ- নাস্তিক দর্শন কয়টি ও কি কি?

উঃ- নাস্তিক দর্শন তিনটি- চার্বাক, জৈন ও বৌদ্ধ।

7. आस्तिकदर्शनानां मुख्यवार्ता का अस्ति?

उ. 'आत्मानं विद्धि' इति मुख्यवार्ता आस्तिकदर्शनानाम्।

৭। প্রশ্নঃ- আস্তিক দর্শনের মুখ্য বার্তা কি?

উঃ- 'আত্মনং বিদ্ধি'।

8. भारतीय दर्शनानुसारं दुःखस्य मूलम् किम्?

उ. अविद्या हि दुःखमूलम्।

৮। প্রশ্নঃ- ভারতীয় দর্শন অনুসারে দুঃখের মূলকারণ কি?

উঃ- 'অবিদ্যা হি দুঃখমূলম্' -অবিদ্যাই দুঃখের কারণ।

9. परमपुरुषार्थं किमस्ति?

उ. आत्यन्तिकदु:खनिवृत्तिः हि परमपुरुषार्थम्।

৯। প্রশ্নঃ- 'পরমপুরষার্থ' কি?

উঃ- আত্যন্তিক দুঃখ নিবৃত্তিই হলো পরমপুরষার্থ।

10. 'सर्वदर्शनसंग्रहः' ग्रन्थस्य प्रणेता कोऽस्ति?

उ. माधवाचार्यः।

১০। প্রশ্নঃ- 'সর্বদর্শনসংগ্রহঃ' গ্রন্থের রচয়িতা কে?

উঃ- মাধবাচার্য।

11. भारतीयदर्शनालोचनायां कति किञ्च स्तरं दृश्यते?

उ. भारतीय दर्शनालोचनायां स्तरत्रयं दृश्यते -पूर्वपक्षः, खण्डनम्, उत्तरपक्षश्च।

১১। প্রশ্নঃ- ভারতীয়দর্শনের আলোচনায় কয়টি ও কি কি স্তর পরিলক্ষিত হয়?

উঃ- ভারতীয়দর্শনের আলোচনায় তিনটি স্তর -পূর্বপক্ষ, খণ্ডন ও উত্তরপক্ষ।

12. आस्तिकदर्शनस्य विभागद्वयं किमस्ति?

उ. वेदानुगतदर्शनम् वेदस्वतन्त्रदर्शनञ्च।

১২। প্রশ্নঃ- আস্তিকদর্শনের বিভাগ কয়টি ও কি কি?

উঃ- দুটি বিভাগ -বেদানুগত দর্শন ও বেদস্বতন্ত্র দর্শন।

13. के तावत् वेदानुगतदर्शने?

उ. मीमांसादर्शनम् वेदान्तदशनञ्च।

১৩। প্রশ্নঃ- বেদানুগতদর্শন কয়টি ও কি কি?

উঃ- দুটি -মীমাংসা ও বেদান্ত।

14. कानि तावत् वेदस्वतन्त्रदर्शनानि?

उ. सांख्यं योगः न्यायं वैशेषिकदर्शनं वेदस्वतन्त्रदर्शनम्।

১৪। প্রশ্নঃ- বেদস্বতন্ত্রদর্শন কয়টি ও কি কি?

উঃ- চারটি-সাংখ্য, যোগ, ন্যায় ও বৈশেষিক।

15. ब्रह्मणः स्वरूपं किम्?

उ. ब्रह्म सच्चिदानन्दस्बरूपं चैतन्यस्वरूपञ्च।

১৫। প্রশ্নঃ- ব্রহ্মের স্বরূপ কি?

উঃ- ব্রহ্ম সচ্চিদানন্দস্বরূপ, চৈতন্যস্বরূপ।

16. जड़वादः कोऽस्ति?

उ. कर्मवादिनः मन्यते –जड़मेव जगतः परमतत्वम्।

১৬। প্রশ্নঃ- জড়বাদ কি?

উঃ- যাঁরা মনে করেন জড়ই জগতের পরমতত্ত্ব, তাঁরা জড়বাদী দার্শনিক।

17. कर्मवादीनां मुख्यवक्तव्यं किमस्ति?

उ. कर्मवादिनः मन्यन्ते यत् कर्मफलेन जगत् जीवनञ्च नियन्त्यते।

১৭। প্রশ্নঃ- কর্মবাদের মুখ্য বক্তব্য কি?

উঃ- কর্মবাদীগণ মনে করেন, কর্মফলের দ্বারাই জগৎ ও জীবন নিয়ন্ত্রিত হয়।

18. सूत्रदर्शनस्य क्रमपर्यायः कोऽस्ति?

उ. सूत्रं भाष्यं टीका च।

১৮। প্রশ্নঃ- সূত্রদর্শনের ক্রমপর্যায় কি কি?

উঃ- সূত্র, ভাষ্য ও টীকা।

19. लोकायतदर्शनं किम्?

उ. चार्वाकदर्शनम्।

১৯। প্রশ্নঃ- লোকায়ত দর্শন কি?

উঃ- চার্বাক দর্শন।

20. भारतीय दर्शनस्य मुख्यवक्तव्यं किमस्ति?

उ. 'नाल्पे सुखमस्ति, भूमैव सुखम्।

২০। প্রশ্নঃ- ভারতীয়দর্শনের মুখ্য বক্তব্য কি?

উঃ- 'নাল্পে সুখমস্তি, ভূমৈব সুখম্'-ক্ষুদ্র নয়, বৃহতেই আনন্দ।

21. त्रिकं किम्?

उ. धर्मार्थकाम मोक्षं हि त्रिकम्।

২১। প্রশ্নঃ- 'ত্রিকা' কি?

উঃ- ধর্ম, অর্থ ও কাম এই তিন পুরুষার্থকে একত্রে ত্রিবর্গ বলা হয়।

22. चतुवर्गपुरुषार्थं किम्?

उ. धर्मार्थकाममोक्षं चतुवर्गपुरुषार्थम्।

২২। প্রশ্নঃ- 'চতুবর্গ পুরুষার্থ' কি?

উঃ- ধর্ম, অর্থ, কাম ও মোক্ষ- এই চারটি পুরুষার্থ একত্রে চতুবর্গ পুরুষার্থ নামে অভিহিত হয়।

चार्वाकदर्शनम्

लघूत्तरीयाः प्रश्नाः

1. 'चार्वाक्' इति नाम कथं जातम्?

उ. चारु वाक् चार्वाक्। जड़वादमाश्रितानि आपातमधुराणि वाक्यानि आश्रित्य जगज्जीवनव्याख्याकारणात् चार्वाक् इति नाम जातम्। षड़दर्शनसमुच्चयटीकाकृता गुणरत्नेन उक्तम् 'चर्वन्ते पुण्यपापादिकम् वस्तुवीजम् इति चार्वाकाः'।

১। চার্বাক এই নামকরণের কারণ কি?

উত্তর। চারু বাক্ -চার্বাক। জড়বাদকে আশ্রয় করে আপাতমধুর বাক্যে জগৎ ও জীবনের ব্যাখ্যার জন্য 'চার্বাক' এই নামকরণ। টীকাকার গুণরত্ন তাঁর 'ষড়দর্শন সমুচ্চয়' এর টীকায় বলেছেন- 'চর্বন্তে পুণ্যপাপাদিকং বস্তুবীজম্ ইতি চার্বাকাঃ'।

2. **चार्वाकदर्शनस्य सम्भाव्यः प्रतिष्ठाता कोऽस्ति?**

उ. देवगुरुणा वृहस्पतिना दर्शनमिदं प्रतिष्ठितमिति साधारणतया मन्यते।

২। চার্বাক দর্শনের সম্ভাব্য প্রতিষ্ঠাতা কে?

উত্তর। দেবগুরু বৃহস্পতি।

3. चार्वाकदर्शनम् अन्यत् केन नाम्ना परिचित्म्?

उ. वृहस्पतिदर्शनम्, लोकायतदर्शनम् -इति नाम्नापि परिचितम्।

৩। চার্বাক দর্শন অন্য কি নামে পরিচিত?

উত্তর। বৃহস্পতি দর্শন, লোকায়ত দর্শন।

4. चार्वाकदर्शनस्य उपलब्धः ग्रन्थः कोऽस्ति?

उ. जयराशिभट्टेन सम्पादितः 'तत्त्वोपप्लवसिंहम्' चार्वाकदर्शनस्य उपलब्धः ग्रन्थः।

৪। চার্বাক দর্শনের উপলব্ধ গ্রন্থ কোনটি?

উত্তর। জয়রাশিভট্ট সম্পাদিত 'তত্ত্বোপপ্লবসিংহম্'।

5. चार्वाकदर्शनस्य मुख्यभाष्यकाराः के सन्ति?

उ. आचार्यः जयराशिभट्टः, अजितकेशम्वली गुणरत्नः प्रमुखाः आचार्याः चार्वाकदर्शनस्य मुख्यभाष्यकाराः।

৫। চার্বাক দর্শনের মুখ্য ভাষ্যকার কে কে?

উত্তর। আচার্য জয়রাশিভট্ট, অজিত কেশকম্বলী, গুণরত্ন প্রমুখ।

6. कथं चार्वाकदर्शनस्य लोकायतमिति अभिधा भवति ?

उ. चार्वाकदर्शनम् जड़वादी। चार्वाकदर्शने परलोकम् अस्वीकृतम्। इहलोकसर्वस्वं चार्वाकदर्शनम्। अथ लोकायतम् (लोके इहलोके आयतम् विस्तृतम्) इति नाम्ना अभिधीयते। "तस्य चार्वाकमतस्य लोकायतमित्यन्वर्थमपरं नामधेयम्"-सर्वदर्शेन माधवाचार्यः।

৬। চার্বাক দর্শনকে লোকায়ত দর্শন বলা হয় কেন?

উত্তর। জড়বাদী চার্বাকদর্শনে পরলোক অস্বীকৃত। ইহলোকসর্বস্ব চার্বাকদর্শন তাই লোকায়ত দর্শন নামে অভিহিত (লোকে ইহলোকে আয়তম্ বিস্তৃতম্ ইতি)। সর্বদর্শনগ্রন্থে, মাধবাচার্য বলেছেন- 'তস্য চার্বাকমতস্য লোকায়তমিত্যন্বর্থমপরং নামধেয়ম্'।

7. चार्वाकदर्शने स्वीकृतानि तत्त्वानि कानि?

उ. क्षिति-अप्-तेज-मरुदादीनि चतुस्तत्त्वानि स्वीकृतानि चार्वाकदर्शने।

৭। চার্বাক দর্শনে তত্ত্ব কয়টি স্বীকৃত ও কি কি?

উত্তর। চারটি- ক্ষিতি,অপ্, তেজ ও মরুৎ।

8. चार्वाकदर्शने आत्मा किमस्ति?

उ. चैतन्यविशिष्टः देहरेव आत्मा।

৮। চার্বাকমতে আত্মা কি?

উত্তর। চৈতন্যবিশিষ্ঠ দেহই আত্মা।

9. चार्वाकमतानुसारं प्रमाणं किम्?

उ. चार्वाकाः प्रत्यक्षमेव प्रमाणरूपेण स्वीकुवन्ति- "प्रत्यक्षमेव प्रमाणम्"।

৯। চার্বাকমতে প্রমাণ কয়টি ও কি?

উত্তর। একটিই প্রমাণ- প্রত্যক্ষ।

10. चार्वाकानुसारं चैतन्यं कथमुत्पद्यते?

उ. गुड़तण्डुलसंयोगात् यथा मद्यं सृज्यते तथैव भूतचतुष्टयसंयोगात् (क्षिति, अप, तेज, मरुत्) चैतन्यमुत्पद्यते।

১০। চৈতন্যের উৎপত্তি সম্পর্কে চার্বাকমত কি?

উত্তর। গুড় ও তণ্ডুলসংযোগে যেমন মদ্য প্রস্তুত হয়, তেমনি ক্ষিতি, অপ্, তেজ, মরুৎ-এই চারপদার্থের সংযোগে চৈতন্য উৎপন্ন হয়।

11. परलोकविषये चार्वाकमतं किमस्ति?

उ. परलोकं नास्ति। मृत्यौ सर्वं परिसमाप्यते।

১১। পরলোক বিষয়ে চার্বাকমত কি?

উত্তর। পরলোক নেই, মৃত্যুতেই সবকিছু শেষ হয়ে যায়।

12. चार्वाकमते पुरुषार्थः कोऽस्ति?

उ. अर्थं च कामं च चार्वाकाः पुरुषार्थरूपेण स्वीकुर्वन्ति।

১২। চার্বাকমতে পুরুষার্থ কয়টি ও কি কি?

উত্তর। দুটি -অর্থ ও কাম।

13. वेदविषये चार्वाकानां सिद्धान्तः कोऽस्ति?

उ. "त्रयो वेदस्य कर्तारो भण्डधूर्तानिशाचराः।
जर्फरीतुर्फरीत्यादिः पण्डितानां वचः स्मृतम्।

১৩। বেদ বিষয়ে চার্বাকদের সিদ্ধান্ত কি?

উত্তর। 'ত্রয়ো বেদস্য কর্তারো ভণ্ডধূর্তানিশাচরাঃ।
জর্ফরীতুর্ফরীত্যাদিঃ পণ্ডিতানাং বচঃ স্মৃতম্।।'

14. अनुमान विषये चार्वाकमतं किमस्ति?

उ. चार्वाकमते अनुमानमसिद्धम्। व्याप्तिज्ञानं प्रत्यक्षसिद्धम्। अथ अनुमानं प्रत्यक्षमूलम्।

১৪। অনুমান প্রমাণ সম্পর্কে চার্বাকদের অভিমত কি?

উত্তর। ব্যাপ্তিজ্ঞান প্রত্যক্ষসিদ্ধ। অনুমান যেহেতু প্রত্যক্ষমূলা, তাই প্রত্যক্ষের অতিরিক্ত অন্য প্রমাণের অস্তিত্ব নেই।

15. चार्वाकज्ञानतत्वस्य वक्तव्यं किमस्ति?

उ. प्रत्यक्षमेव प्रमाणम्। प्रत्यक्षमन्तरेण अन्यत् प्रमाणं नास्ति।

১৫। চার্বাকজ্ঞানতত্ত্বের সিদ্ধান্ত কি?

উত্তর। চার্বাকমতে প্রত্যক্ষই একমাত্র প্রমাণ। প্রত্যক্ষ ছাড়া অন্য কোন প্রমাণ নেই

16. चार्वाकानुसारं के तावद् वेदरचयितारः?

उ. भण्ड-धूर्त-निशाचराः वेदरचयितारः इत्येवं मन्यन्ते चार्वाकाः- 'त्रयोवेदस्य कर्तारो भण्डधूर्तनिशाचराः'।

১৬। বেদের রচয়িতাসম্পর্কে চার্বাকদের অভিমত কি?

উত্তর। ভণ্ড, ধূর্ত ও নিশাচরেরা বেদরচয়িতা- 'ত্রয়ো বেদস্য কর্তারো ভণ্ডধূর্তনিশাচরাঃ'।

17. चार्वाकदर्शनात् कश्चित् जनप्रियः श्लोकः उदाहरणीयः?

उ. यावज्जीवेत् सुखं जीवेत् ऋणं कृत्वा घृतं पिवेत्।
भस्मीभूतस्य देहस्य पुनरागमं कुतः।

১৭। চার্বাকদর্শনের যে কোন একটি জনপ্রিয় শ্লোক উদধৃত কর।

উত্তর। যাবজ্জীবেৎসুখং জীবেৎ ঋণং কৃত্বা ঘৃতং পিবেৎ।
ভস্মীভূতস্য দেহস্য পুনরাগমং কুতঃ।

18. चार्वाकदेहात्मवादं व्याख्यायताम्?

उ. क्षिति-अप-तेज-मरुदिति भूतचतुष्टयेभ्यः उत्पन्ने देहे चैतन्यं स्वाभाविकतया उत्पद्यते। अयं चैतन्यविशिष्टः कायः पुरुषः। तस्मादतिरिक्तं आत्मा नास्ति।

১৮। চার্বাকদেহাত্মবাদ কি?

উত্তর। চৈতন্য ভূতচতুষ্টয় (ক্ষিতি, অপ্, তেজ ও মরুৎ) যোগে দেহে স্বাভাবিক নিয়মেই উৎপন্ন হয়। এই চৈতন্যবিশিষ্টদেহই আত্মা।

19. चार्वाकमते अपवर्गः कः भवति?

उ. चार्वाकमते मृत्युरेव अपवर्गः।

১৯। চার্বাক মতে অপবর্গ কি?

উত্তর। মৃত্যুই অপবর্গ।

20. चार्वाकानां अधिविद्या का?

उ. चार्वाकाः जड़वादिनः। ते मन्यन्ते भूतचतुष्टयेभ्यः ऊत्पन्नं आत्मा। कर्मफलं परलोकं नास्त्येव। अथ ते प्रत्यक्षमन्तरेण अनुमाननिर्भरां अधिविद्यां न स्वीकुर्वन्ति।

২০। চার্বাকদের অধিবিদ্য কি?

উত্তর। চার্বাকগণ মনে করেন ভূতচতুষ্টয় থেকে আত্মা উৎপন্ন হয়। কর্মফল বা পরলোক বলে কিছু নেই তাই প্রত্যক্ষব্যতীত অনুমাননির্ভর অধিবিদ্যা ও তাঁরা স্বীকার করেন না।

সংক্ষিপ্ত প্রশ্নোত্তর

১। চার্বাক দর্শনের প্রতিষ্ঠাতা বা প্রবর্ত্তক কে?

উত্তর। চার্বাক দর্শনের কোন মূল গ্রন্থ পাওয়া যায় না। অনেকের মতে আচার্য বৃহস্পতি চার্বাকসূত্রগ্রন্থের রচয়িতা ও প্রবর্ত্তক। কেউ কেউ মনে করেন অজিতকেশকম্বলী বা কম্বলাশ্বতর চার্বাক দর্শনের প্রবর্ত্তক।

২। 'চার্বাক' কথার অর্থ কি?

উত্তর। চার্বাক কথার অর্থ হলো - 'যাঁরা 'খাও, দাও, আনন্দ কর' ইত্যাদি (চারুঃবাক্

যস্য স চার্বাকঃ) মুখরোচক কথা বলে সাধারণ জনতার মনোহরণ করতেন তাঁরাই চার্বাক। 'চর্বন্তো পুণ্যপাপাদিকং বস্তুবীজম্ ইতি। চার্বাকাঃ' '---যাঁরা পাপ-পুণ্য প্রভৃতি পরোক্ষতত্ত্বকে চর্বণ বা বিনাশ করতেন তাঁরাই চার্বাক। এঁরা জড়বাদী চাবী বা চার্বাক ঋষির মত প্রচার করতেন।

৩। চার্বাকদের জড়বাদী বলা হয় কেন?

উত্তর। চার্বাকেরা 'পৃথিব্যপ্তেজো মরুৎ' অর্থাৎ পৃথিবী, জল, তেজ ও বায়ু এই চারটি ভূত বা জড় তত্ত্ব হতে জগতের উৎপত্তি ও জগদ্বৈচিত্র্য ব্যাখ্যা করেন। এমনকি জড় থেকেই জল, প্রাণ ইত্যাদির ও সৃষ্টি তাই এদের জড়বাদী (Meterialist) বলা হয়।

৪। চার্বাক দর্শন 'নাস্তিক' কেন?

উত্তর। চার্বাকেরা ঈশ্বর মানেন না এবং বেদ বিশ্বাস করেন না তাই, 'নাস্তিক' রূপে পরিচিত।

৫। চার্বাক দর্শনের অপর নাম কি এবং কেন?

উত্তর। চার্বাক দর্শনের অপর নাম 'লোকায়ত দর্শন'।

চার্বাক মতে ইহলোকই একমাত্র অস্তিত্বশীল, পরলোক বলে কিছু নাই। তাই সর্বদর্শন সংগ্রহে মাধবাচার্য বলেছেন---'তস্য চার্বাকমতস্য লোকায়তমিত্যন্বর্থমপর নামধেয়ম'। এছাড়া চার্বাকেরা বৈদিক যাগযজ্ঞের বিরুদ্ধে সাধারণ মানুষের সন্দেহমূলক কথাবার্ত্তা ও ভাবধারা প্রকাশ করতেন বলেও এঁদের 'লোকায়ত' বলা হতো।

৫। দেহাত্মবাদ কি?

উত্তর। চার্বাকমতে ক্ষিতি, অপ্, তেজ ও বায়ু এই চতুর্ভূজের যদৃচ্ছ সংমিশ্রণে দেহ উৎপন্ন হলে সেই দেহে স্বাভাবিক নিয়মে চৈতন্যেরও উৎপত্তি হয়। এই চৈতন্য দেহেরই ধর্ম---'চৈতন্য বিশিষ্টঃ কায়ঃ পুরুষঃ'। পৃথক্ ভাগে আত্মা স্বীকারের প্রয়োজন নাই। এরই নাম দেহাত্মবাদ।

৭। চার্বাকমতে অপবর্গ কি?

উত্তর। চার্বাকমতে মৃত্যুই অপবর্গ---'মরণমেবাপবর্গঃ' (সূত্র ৫)। আত্মার কোন সত্তা না থাকায় তার বন্ধন বা মুক্তির প্রশ্নই অবান্তর।

৮। চার্বাকমতে পুরুষার্থ কি?

উত্তর। চার্বাকমতে 'কাম এব পুরুষার্থঃ', কামচরিতার্থ করাই একমাত্র পুরুষার্থ। অবশ্য পরবর্ত্তীকালে সুশিক্ষিত চার্বাকেরা কামের সংগে অর্থকে সংযুক্ত করে বলেছেন---'অর্থকামৌ পুরুষার্থৌ' (সূত্র ২৭)।

৯। চার্বাকমতে প্রমাণ কোনটি?

উত্তর। চার্বাকমতে একমাত্র প্রত্যক্ষই প্রমাণ---'প্রত্যক্ষমেব প্রমাণম্' (সূত্র, ২৫)।

১০। চার্বাকেরা অনুমান স্বীকার করেন না কেন?

উত্তর। অনুমান প্রত্যক্ষনির্ভর। অনুমান করতে হলে যে ব্যাপ্তিজ্ঞানের প্রয়োজন অর্থাৎ কার্য ও কারণের নিয়ত সাহচর্যজ্ঞান, তা কখনও সম্ভব হয় না। যেমন ধূম ও বহ্নির সাহচর্য জ্ঞান মহানসাদিতে হলেও সকল ধূম ও বহ্নির সার্বিক প্রত্যক্ষ অসম্ভব বলে অনুমান স্বীকার করা যায় না।

১১। চার্বাকমতে বেদের রচয়িতা কারা?

উত্তর। চার্বাকমতে 'ত্রয়ো বেদস্য কর্ত্তারো ভণ্ডধূর্ত নিশাচরাঃ' অর্থাৎ বেদের রচয়িতা ভণ্ড, ধূর্ত ও নিশাচর, এই তিন শ্রেণীর লোক।

১২। চার্বাকদের সংশয়বাদটি কি?

উত্তর। চার্বাকেরা প্রত্যক্ষ প্রমাণবাদী হলেও চরমপন্থী বৈতণ্ডিক জয়রাশি ভট্টের মতে প্রত্যক্ষ লক্ষণ ও অব্যাপ্তি প্রভৃতি একাধিক দোষে দুষ্ট হওয়ায় গ্রহণযোগ্য নয়। তাই তাঁরা সর্বত্র সংশয় অর্থাৎ অনিশ্চয়তা দেখেন। অর্থাৎ কোন বিষয়েই নিশ্চিত জ্ঞান হতে পারে না। এর নাম সংশয়বাদ।

2. जैनधर्मगुरुः केन नाम्ना परिचितः भवति?

उ. 'तीर्थङ्कर' इति नाम्ना परिचितः भवति।

২। জৈনধর্মগুরু কি নামে অভিহিত হন?

উত্তর। তীর্থঙ্কর।

3. जैनधर्मस्य प्रथमः तथा अन्तिमः तीर्थङ्करश्च कौ ?

उ. प्रथम तीर्थङ्करः-ऋषभदेवः, अन्तिमः तीर्थङ्करः-महावीरः वर्धमानः।

৩। জৈনধর্মের প্রথম তীর্থঙ্কর কে? অন্তিম তীথঙ্কর কে?

উত্তর। প্রথম তীর্থঙ্কর ঋষভদেব। অন্তিম তীর্থঙ্কর মহাবীর বর্ধমান।

4. जैनधर्मस्य प्रधानविभागौ कौ स्तः?

उ. दिगम्वरश्वताम्वरौ।

৪। জৈনধর্মের প্রধান বিভাগ কয়টি ও কি কি?

উত্তর। দুটি - দিগম্বর ও শ্বেতাম্বর।

5. के च दिगम्वराः?

उ. नग्नजैनसन्न्यासिनः दिगम्वराः। ते च रक्षणशीलाः।

৫। দিগম্বর কারা?

উত্তর। নগ্নজৈনসন্ন্যাসীগণ দিগম্বর। তাঁরা রক্ষণশীল।

6. के च श्वेताम्वराः?

उ. श्वेतकौपिणधारिणः जैनसन्न्यासिनः श्वेताम्वराः। ते उदारपन्थिनः।

৬। শ্বেতাম্বর কারা?

উত্তর। শ্বেতকৌপিনধারী সন্ন্যাসীগণ শ্বেতাম্বর। তাঁরা উদারপন্থী।

7. जैनधर्मस्य प्राचीनग्रन्थः कोऽस्ति?

उ. जैनसन्न्यासीदेवरधिसम्पादितः जैनसिद्धान्तः जैनधर्मस्य प्राचीनतमः ग्रन्थः।

৭। জৈন ধর্মের প্রাচীনতম গ্রন্থ কি?

উত্তর। জৈনসন্ন্যাসী দেবরধিসম্পাদিত 'জৈনসিদ্ধান্ত'।

8. जैनसम्मताः पञ्चप्रमाः काः सन्ति?

उ. मति-श्रुति-अवधि-मनःपर्याय-केवलश्चेति जैनसम्मताः पञ्चप्रमाः।

৮। জৈনমতে পঞ্চপ্রমা কি কি?

উত্তর। মতি-শ্রুতি-অবধি-মনঃ পর্যায়-কেবল এগুলি হল পঞ্চপ্রমা।

9. जैनमतानुसारं प्रमाणं कतिविधम्?

उ. जैनमतानुसारं प्रमाणं त्रिविधम्-प्रत्यक्षम्, परोक्षम्, शव्दश्चेति।

৯। জৈনমতে প্রমাণ কয় প্রকার ও কি কি?

উত্তর। জৈনমতে প্রমান ত্রিবিধ-প্রত্যক্ষ, পরোক্ষ ও শব্দ।

10. शव्दप्रमाणं किम्?

उ. प्रसिद्धग्रन्थात् परमज्ञानीमुखाच्च लब्धं प्रमाणं शव्दप्रमाणम्।

১০। শব্দপ্রমাণ কি?

উত্তর। প্রসিদ্ধ গ্রন্থ থেকে বা পরমজ্ঞানী ব্যক্তির মুখ থেকে প্রাপ্ত জ্ঞানকে শব্দপ্রমাণ বলে।

11. जैनानां 'अधिविद्या' का भवति?

उ. जैनाः वस्तुनः असंख्यान् धर्मान् स्वीकुर्वन्ति –"अनन्तं धर्मात्मकं वस्तु"। अथ ते अनेकान्तवादिनः।

১১। জৈনমতে অধিবিদ্যা কি?

উত্তর। জৈনমতে বস্তু অসংখ্যধর্ম বিশিষ্ট- 'অনন্তং ধর্মাত্মকং বস্তু'। এটাই তাঁদের মতে অনেকান্তবাদ।

12. स्याद्वादः कः भवति?

उ. अनेकान्तवादीजैनदर्शनानुसारं वस्तु अनन्तधर्मविशिष्टम्। न किञ्चित् अवधारनं पूर्णसत्यम्, अपि तु आंशिकसत्यम्। इदम् आंशिकसत्यं 'स्यात्' अभिधाप्राप्तं भवति।

১২। স্যাদ্‌বাদ কি?

উত্তর। অনেকান্তবাদী জৈন দর্শনানুসারে বস্তু অনন্ত ধর্মবিশিষ্ট। এই অবধারণ পূর্ণসত্য নয়, আংশিক সত্য। এই আংশিক সত্য স্যাৎঅভিধা প্রাপ্ত হয়।

13. 'स्यात्' कति विधम्? कानि च तानि?

उ. 'स्यात्' सप्तविधम्। स्यादस्ति, स्याद्नास्ति, स्याद् अस्ति च नास्ति च, स्याद् अव्यक्तम्, स्याद् अस्ति च अव्यक्तम्, स्याद् नास्ति च अव्यक्तम्, स्याद् अस्ति च नास्ति च अव्यक्तं च।

১৩। 'স্যাৎ' কয় প্রকার ও কি কি?

উত্তর। 'স্যাৎ' সাত প্রকার-স্যাদ্ অস্তি, স্যাদ্ নস্তি, স্যাদ্ অস্তি চ নাস্তি চ, স্যাদ্ অব্যক্তম্, স্যাদ্ অস্তি চ অব্যক্তম্, স্যাদ্ নাস্তি চ অব্যক্তম্, স্যাদ্ অস্তি চ নাস্তি চ অব্যক্তং চ।

14. जैनमतानुसारं जीवलक्षणं किम्?

उ. चेतनालक्षणो जीवः।

১৪। জৈন মতানুসারে 'জীবলক্ষণ' কি?

উত্তর। 'চেতনালক্ষণো জীবঃ' চেতনালক্ষণই জীবলক্ষণ।

15. जैनमतानुसारम् आत्मा किम?

उ. आत्मा चैतन्यस्वरूपं ज्ञानस्वरूपञ्च।

১৫। জৈন মতানুসারে আত্মা কি?

উত্তর। জৈনমতানুসারে আত্মা হল চৈতন্যস্বরূপ ও জ্ঞানস্বরূপ।

16. जैन दर्शने 'नयः' कः भवति?

उ. अनन्तधर्मविशिष्टस्य वस्तुनः धर्मविशेषस्य गुणविशेषस्य आंशिकं ज्ञानं 'नयः' इत्युच्यते।

১৬। জৈন দর্শনে 'নয়' কি?

উত্তর। অনন্তধর্ম বিশিষ্ট বস্তুর ধর্মবিশেষের গুণবিশেষের আংশিক জ্ঞান 'নয়' নামে অভিহিত হয়।

17. जैनमतानुसारं द्रव्यं किम्?

उ. जैनमतानुसारं धर्मी एव द्रव्यम्। द्रव्यं गुणपर्याययोः आश्रयः।

১৭। জৈন মতানুসারে 'দ্রব্য' কি?

উত্তর। জৈনমতানুসারে ধর্মীই দ্রব্য। দ্রব্য গুণপর্যায়ের আশ্রয়।

18. जैनदर्शने जीवस्य को विभागः भवति?

उ. जैनदर्शने जीवस्य द्विविधत्वमूक्तम्- मुक्तः वद्धश्च।

১৮। জৈন দর্শনে জীবের কয়টি বিভাগ হয়?

উত্তর। জৈন দর্শনে জীবের দুটি বিভাগ- মুক্ত ও বদ্ধ।

19. जैनदर्शने अजीवस्य को विभागः भवति?

उ. जैनमतानुसारं अजीवः पञ्चविधः भवति। धर्मः, अधर्मः, आकाशः, पुद्गलः, कालश्चेति।

১৯। জৈন দর্শনে অজীবের কয়টি বিভাগ ও কি কি?

উত্তর। জৈন মতে অজীব পাঁচ প্রকারের হয়- ধর্ম, অধর্ম, আকাশ, পুদ্গল ও কাল।

20. 'पुद्गलः' को भवति?

उ. जैनदर्शने अजीवस्य तथा जड़स्य विभागविशेषः पुद्गलः।

২০। 'পুদ্গল' কি?

উত্তর। জৈন দর্শনে অজীব তথা জড়ের বিভাগ বিশেষ হল পুদ্গল।

21. पुद्गलस्य को विभाग भवति?

उ. पुद्गलः द्विविधः-अणुः संघातश्चेति।

২১। পুদ্গল কয় প্রকার ও কি কি?

উত্তর। পুদ্গল দু প্রকার হয়- অণু ও সংঘাত।

22. जैनदर्शने 'वन्धनं' किं भवति?

उ. जैनदर्शनं कर्मफलं स्वीकरोति। पूर्वकर्मानुसारं भोगादीनां सृष्टिः भवति। भोगवशात् देहधारणं भवति---तदेव वन्धनम्।

২২। জৈনদর্শনে 'বন্ধন' কি?

উত্তর। জৈনদর্শনে কর্মফল স্বীকার করা হয়। পূর্বকর্ম অনুসারে ভোগাদীর সৃষ্টি হয়। ভোগ থেকে দেহধারণ হয়। এটাই হল বন্ধন।

23. जैनमतानुसारं मुक्तिः का भवति?

उ. भोगवासनादीनां त्यागात् पुदगलात् विच्छिन्नता हि मुक्तिः।

২৩। জৈন মতে 'মুক্তি' কি?

উত্তর। ভোগবাসনা ত্যাগ করে পুদ্গল বিচ্ছিন্নতাই হল মুক্তি।

24. जैनदर्शनस्य 'त्रिरत्नम्' किं भबति?

उ. सम्यक दर्शनम्, सम्यक् ज्ञानम्, सम्यक चरित्रं जैनानां 'त्रिरत्नम्'।

২৪। জৈন দর্শনে 'ত্রিরত্ন' কি?

উত্তর। জৈনদর্চনে ত্রিরত্ন হল-সম্যক দর্শন, সম্যক জ্ঞান ও সম্যক চরিত্র।

25. पञ्चमहाव्रतः को भवति?

उ. अहिंसा, सत्यम्, अस्तेयः, ब्रह्मचर्यम्, अपरिग्रहश्चेति पञ्चमहाव्रतः।

২৫। পঞ্চমহাব্রত কি?

উত্তর। অহিংসা, সত্য, অস্তেয়, ব্রহ্মচর্য ও অপরিগ্রহ -এগুলি হল পঞ্চমহাব্রত।

26. जैनदर्शने ईश्वरस्य स्थानं किम्।

उ. जैनदर्शनं निरीश्वरवादी। किन्तु जैनमतावलम्बिनः सिद्धपुरुषान् तीर्थङ्करान् ईश्वरत्वेन स्वीकुर्वन्ति।

২৬। জৈনদর্শনে ঈশ্বরের স্থান কিরকম?

উত্তর। জৈনদর্শন নিরীশ্বরবাদী। কিন্তু জৈনমতাবলম্বীগন সিদ্ধপুরুষদেরকে তীর্থঙ্করগণকে ঈশ্বরপূপে স্বীকার করেন।

27. अनुव्रतश्मच महाव्रतश्च कौ भवतः?

उ. गृहीणाम् आचरणीयः धर्मः अनुव्रतः। तथा श्रमनानां आचरणीयः धर्मः महाव्रतः।

২৭। 'অনুব্রত' ও 'মহাব্রত' কি?

উত্তর। গৃহীনিদের আচরণীয় ধর্ম হল অনুব্রত ।

আর -শ্রমের দ্বারা আচরণীয় ধর্ম হল মহাব্রত।

28. अपरिग्रहः को भवति?

उ. 'सर्वभावेषु मूर्छायाः त्यागः स्यादपरिग्रहः।

২৮। 'অপরিগ্রহ' কি?

উত্তর। সকল প্রকার মূর্ছার ত্যাগই হল অপরিগ্রহ।

29. जैनदर्शने कर्मणः कतिविधित्वं स्वीकृतम्।

उ. 'अष्टौ विधित्वम्। तानि च ज्ञानावरणीकर्म, दर्शनावरणीकर्म, वेदनीयकर्म, मोहनीयकर्म, आयुष्कःकर्म, नामकर्म, गोत्रकर्म, अन्तराय कर्मञ्च।

২৯। জৈনদর্শনে কর্ম কত প্রকার স্বীকৃত?

উত্তর। জৈনদর্শনে কর্ম আট প্রকার - জ্ঞানাবরণী কর্ম, দর্শনাবরণী কর্ম, বেদনীয় কর্ম, মোহনীয় কর্ম, অয়ুকর্ম, নামকর্ম, গোত্রকর্ম ও অন্তসায় কর্ম।

30. जैननीतिविद्यायाः सारं किम्?

उ. 'आस्रवो भवहेतुः स्यात् संवरो मुख्यकारणम्।

৩০। জৈন নীতি বিদ্যার 'সার' কি?

উত্তর। 'আস্রবো ভবহেতুঃ স্যাৎ সংবরো মুখ্যকারণম্'।

সংক্ষিপ্ত প্রশ্নোত্তর

১। জৈন দর্শনে 'স্যাৎ' শব্দটির অর্থ কি?

উত্তর। জৈন দর্শনে 'স্যাৎ' শব্দটির অর্থ হলো---'হতে পারে'। জৈন মতে একটি বস্তুর অসংখ্য গুণ বা ধর্মের মধ্যে একটি বিশেষ গুণ বা ধর্ম জানা যায়। বস্তুটির অন্যান্য গুণ বা ধর্ম তখন জনা যায় না। তাই প্রত্যেকটি বিশেষ গুণ বা ধর্ম জানার সময় 'স্যাৎ' কথাটি জুড়ে দিলে বস্তুটির আংশিক সত্য জানা যায় এবং অন্যান্য ধর্মের ও যে সত্য হওয়ার সম্ভাবনা, তাও বোঝা যায়।

২। জৈন দর্শনের প্রতিষ্ঠাতা কে?

উত্তর। জৈন দর্শন বহু প্রাচীন হওয়ায় এর প্রকৃত প্রতিষ্ঠাতার নাম পাওয়া যায় না। প্রাপ্ত জৈনদর্শনের প্রচারক রূপে মহাবীর বা বর্ধমানের নাম করতে হয়। ঋষভদেব থেকে মহাবীর পর্যন্ত মোট চব্বিশজন তীর্থঙ্করকে জৈনধর্মের প্রবর্ত্তক বা প্রচারক বলা হয়।

৩। মহাবীর বা বর্ধমানের সময় নির্ণয় কর।

উত্তর। মহাবীর বর্ধমানের জন্ম আনুমানিক ৫৯৯ খৃ. পূর্ব্বাব্দ এবং মৃত্যু ৫২৭ খৃ. পূর্ব্বাব্দ।

৪। জৈনগণ কয়টি সম্প্রদায়ে বিভক্ত এবং কি কি?

উত্তর। জৈনগন দুটি সম্প্রদায়ে বিভক্ত---দিগম্বর ও শ্বেতাম্বর। দিগম্বরগণ চরমপন্থী এবং শ্বেতাম্বরগণ উদারপন্থী।

৫। জৈনমতে আত্মা কি?

উত্তর। জৈনমতে আত্মা চৈতন্য বা জ্ঞানের স্বরূপ। তাঁরা চৈতন্যকে আত্মার আগন্তুক গুণ মনে করেন না। আত্মা স্বপ্রকাশ।

৬। জৈনমতে যথার্থজ্ঞান কত প্রকার ও কি কি?

উত্তর। জৈনমতে যথার্থজ্ঞান পাঁচ প্রকার। যথা---মতি, শ্রুত, অবধি, মনঃপর্যায় ও কেবল।

৭। জৈনমতে 'অনেকান্তবাদ'টি কি?

উত্তর। জৈনমতে 'অনেকন্তবাদ' হলো যে কোন বস্তুর মধ্যে অসংখ্যগুণ বা ধর্ম স্বীকার করা 'অনন্তং ধর্মাত্মকং বস্তু' এরই নাম অনেকান্তবাদ।

৮। জৈন দর্শনে 'নয়' কাকে বলে?

উত্তর। বস্তুর অনন্তধর্মের মধ্যে একটি বিশেষ ধর্ম বা গুণের আংশিক জ্ঞানকে জৈনদর্শনে 'নয়' বলা হয়। একটি বিশেষ দৃষ্টিকোণ থেকে 'নয়'টি সত্য।

৯। জৈন দর্শনে 'নয়' কয় প্রকার ও কি কি?

উত্তর। জৈন দর্শনে সাতটি নয় স্বীকার করা হয়। যথা---(১) স্যাৎ অস্তি, (২) স্যাৎ নাস্তি, (৩) স্যাৎ অস্তি চ নাস্তি চ, (৪) স্যাৎ অব্যক্ত, (৫) স্যাৎ অস্তি চ নাস্তি চ অব্যক্ত, (৬) স্যাৎ নাস্তি চ অব্যত্ত, (৭) স্যাৎ অস্তি চ নাস্তি চ অব্যক্ত।

১০। জৈনমতে দ্রব্য কি?

উত্তর। জৈনগণ 'ধর্মী' কে ই দ্রব্য বলেন। 'দ্রব্য' গুণ ও পর্যায়ের আশ্রয়।

১১। জৈন মতে জীব কয়প্রকার ও কি কি?

উত্তর। জৈনমতে জীব দু'প্রকার---মুক্ত ও বদ্ধ।

১২। জৈনমতে 'অজীব' কয়প্রকার ও কি কি?

উত্তর। জৈনমতে 'অজীব' পাঁচপ্রকার। যথা ধর্ম, অধর্ম, আকাশ, পুদ্গল বা জড় এবং কাল।

১৩। জৈন মতে 'পুদ্গল' বলতে কি বোঝ?

উত্তর। জৈন দর্শনে জড় (matter)-কে পুদ্গল বলা হয়। যে দ্রব্যকে যুক্ত বা বিযুক্ত করা যায় তাই পুদ্গল নামে অভিহত। পুদ্গলে দুটি অবস্থা---অণু ও সংঘাত। কোন দ্রব্যকে ভাঙ্গতে ভাঙ্গতে যখন এমন পর্যায়ে আসে যে আর তাকে ভাঙ্গা

যায় না, সেই অবস্থার নাম অণু বা পরমাণু, একাধিক অণু মিলে যে সংঘাত বা সম্বন্ধ সৃষ্টি হয় তাই জগৎ।

১৪। জৈন দর্শনে বন্ধন ও মুক্তি কি?

উত্তর। জৈনমতে পূর্বজন্মের কৃতকর্মের ফলে ভোগ, লালসা, কামনা-বাসনা সৃষ্টি হয় এবং সেই সকল কামনা-বাসনা ভোগের জন্য আত্মা বা জীবকে দেহধারণ করতে হয়। এটাই বন্ধন। জীব সম্পূর্ণরূপে পুদ্গল থেকে মুক্ত হলেই মুক্তি পায়।

১৫। জৈনদর্শনে 'ত্রিরত্ন' কি?

উত্তর। জৈন দর্শনে 'ত্রিরত্ন' হলো---সম্যক্ দর্শন, সম্যক্ জ্ঞান ও সম্যক্ চারিত্র।

১৬। জৈন ধর্মে পঞ্চমহাব্রত কি কি?

উত্তর। জৈনধর্মে পঞ্চমহাব্রত হলো---(১) অহিংসা, (২) সত্য, (৩) অস্তেয়, (৪) ব্রহ্মচর্য, (৫) অপরিগ্রহ।

১৭। জৈন দর্শনে ঈশ্বরের স্থান কি?

উত্তর। জৈন দর্শন ঈশ্বরে বিশ্বাস করেনা। তাই তাঁরা নিরীশ্বরবাদী। তবে জৈনগণ সিদ্ধপুরুষ তীর্থঙ্করদের পূজা ও ধ্যানে একান্ত বিশ্বাসী। সুতরাং বলা যায় তীর্থঙ্করগণ ঈশ্বরস্থানীয়।

১৮। জৈনদর্শন কে 'মানবতাবাদী' বলা হয় কেন?

উত্তর। জৈনমতে মানুষ সর্বশ্রেষ্ঠ। মানুষের উপরে কেউ নাই। মানুষের মধ্যেই পূর্ণতা ও ঈশ্বরতা। মানুষের পূর্ণতা প্রাপ্তিই জৈনধর্মের লক্ষ্য হওয়ায়, এই দর্শনকে 'মানবতাবাদী' বলা হয়।

উত্তর। ভগবান বুদ্ধের উপদেশই বৌদ্ধদর্শনের মূল।

4. वौद्धधर्मस्य मुख्यग्रन्थः कः भवति?

उ. त्रिपिटकं वौद्धदर्शनस्य मुख्यग्रन्थः। भगवतः वुद्धस्य उपदेशानि पिटकत्रये विन्यस्तम्। विनयपिटक-सूत्तपिटक-अभिधम्मपिटकम् इति त्रिपिटकम्।

৪। বৌদ্ধধমের মুখ্য গ্রন্থ কি?

উত্তর। বৌদ্ধধর্মের মুখ্য গ্রন্থ হল ত্রিপিটক। ভগবান বুদ্ধের উপদেশ তিনটি পিটকে বিন্যস্ত। বিনয় পিটক-সূত্ত পিটক- অভিধর্ম পিটক -এই তিনটি হল ত্রিপিটক।

5. गौतमवुद्धः अन्यत् केन नाम्ना परिचितः?

उ. तथागतः, सुगतः इत्यादिना नाम्ना अपि गौतमवुद्धः परिचितः।

৫। গৌতমবুদ্ধ অন্য কি নামে পরিচিত?

উত্তর। গৌতমবুদ্ধ তথাগত, সুগত ইত্যাদি নামে অভিহিত হয়।

6. सूत्तपिटकस्य के तावत् विभागाः सन्ति?

उ. सूत्तपिटकं पञ्चधा विभक्तम्-दीर्घनिकायः, मजझिमनिकायः, संयुक्तनिकायः, अङ्गुत्तरनिकाय, खुद्दकनिकाय।

৬। সূত্তপিটকের কয়টি বিভাগ রয়েছে?

উত্তর। সূত্তপিটক পাঁচ প্রকার- দীর্ঘ নিকায়, মঝ্ঝিমনিকায়, সংযুক্তনিকায়, অঙ্গুত্তর নিকায় এবং খুদ্দকনিকায়।

7. स्थविरवादः कोऽस्थि?

उ. निकायग्रन्थेषु उपलव्धः मतवादः स्थविरवादः।

৭। স্থবিরবাদ কি?

উত্তর। নিকায় গ্রন্থে উপলব্ধ মতবাদ স্থবিরবাদ।

8. वोधिवृक्षतले भगवता वुद्धेन किं ज्ञानं प्राप्तम्।

उ. वोधिवृक्षतले भगवता वुद्धेन चत्वारि आर्यसत्यानि उपलव्धितानि।

৮। বোধিবৃক্ষতলে ভগবান বুদ্ধ কি জ্ঞান প্রাপ্ত হন?

উত্তর। বোধিবৃক্ষতলে ভগবান বুদ্ধ চারটি আর্যসত্য উপলব্ধি করেন।

9. कानि तावत् आर्यसत्यानि?

उ. चत्वारि आर्यसत्यानि-(१) दुःखमस्ति,(२) दुःखस्य कारणमस्तिस (३) दुखस्य निरोधः अस्ति, (४) दुःखनिरोधस्य उपायः अस्ति।

৯। আর্যসত্য কি কি?

উত্তর। চারটি আর্যসত্য হল- (১) দুঃখ আছে (২) দুঃখের কারণ আছে (৩) দুঃখের নিরোধ আছে (৪) দুঃখ নিরোধের উপায় আছে।

10. 'द्वादश निदानम्' 'भवचक्रम्' वा किं भवति?

उ. वौद्धदर्शनस्य द्वितीयार्यसत्यान्तगर्तं द्वादशनिदानम् भवचक्रं वा। दुःखस्य कारण निर्णये भगवता वुद्धेन उक्तम्-अविद्या, संस्कारः, विज्ञानम्, नामरूपम्, षड़ायतनम्, स्पर्शम्, वेदना, तृष्णा, उपादानम्, भवः, जातिः, जरामरणञ्चेति द्वादशनिदधानम्, तथा भवचक्रम्।

১০। 'দ্বাদশনিদান' বা 'ভবচক্র' কি?

উত্তর। বৌদ্ধদর্শনের দ্বিতীয় আর্যসত্যের অন্তর্গত হল দ্বাদশনিধান বা ভবচক্র। দুঃখের কারণ নির্ণয়ে ভগবান বুদ্ধ বলেছেন- অবিদ্যা, সংস্কার, বিজ্ঞান, নামরূপ, ষড়ায়তন, স্পর্শ, বেদনা, তৃষ্ণা, উপাদান, ভব, জাতি ও জরামরণ হল দ্বাদশনিদান বা ভবচক্র।

11. दुःखनिरोधोपायः वुद्धेन कथमुपदिष्टः?

उ. 'अष्टाङ्गिकमार्गयोगेन वुद्धेन दुःखनिरोधोपायः उपदिष्टः।

১১। দুঃখ নিরোধের উপায় হিসেবে ভগবান বুদ্ধ উপদেশ দিয়েছেন?

উত্তর। দুঃখ নিরোধের উপায় হিসেবে ভগবান বুদ্ধ অষ্টাঙ্গিক মার্গের কথা বলেছেন।

12. कश्च अष्टाङ्गिकमार्गः?

उ. सम्यक् दृष्टिः, सम्यक् सङ्कल्पः, सम्यक् वाक्, सम्यक् कर्मान्तः, सम्यक् आजीवम्, सम्यक् व्यायामः, सम्यक् स्मृतिः, सम्यक् समाधिश्च।

১২। অষ্টাঙ্গিকমার্গ কি?

উত্তর। সম্যক্ দৃষ্টি, সম্যক সংকল্প, সম্যক বাক্, সম্যক কর্মান্ত, সম্যক্ আজীব, সম্যক ব্যায়াম, সম্যক স্মৃতি, সম্যক সমাধি।

13. समाधिः कति स्तरविशिष्टः।

उ. समाधिः चतुःस्तरविशिष्टः- वितर्क-विचार-उदासीनता-प्रज्ञा चेति।

১৩। সমাধি কয়টি স্তর বিশিষ্ট?

উত্তর। সমাধি চারটি স্তর বিশিষ্ট-বিতর্ক, বিচার, উদাসীন, প্রজ্ঞা।

14. 'प्रतीत्यसमुत्पादवादः' कः भवति?

उ. वौद्धदर्शने कार्यकारणतत्त्वं प्रतीत्यसमुत्पादवादः इति ख्यातः।

১৪। সমুৎপাদবাদ কি?

উত্তর। সমুৎপাদবাদ বৌদ্ধদর্শনের কার্যকারণতত্ত্ব।

15. 'प्रतीत्य समुत्पाद' शब्दस्य कोऽर्थः?

उ. 'प्रतीत्य-यत् कस्यापि अधीनस्थम्', 'समुत्पादः' -उत्पत्तिः। इदं प्रतीत्य इदं समुत्पद्यते।

১৫। 'প্রতীত্যসমুৎপাদ' শব্দের অর্থ কি?

উত্তর। প্রতীত্য যা কোনো কিছুর অধীন, সমুৎপাদ -উৎপত্তি। কোনো কিছুর অধীনে থেকে উৎপন্ন হওয়াই হল প্রতীত্যসমুৎপাদ।

16. वौद्धकर्मवादः कः भवति?

उ. वौद्धदर्शने कर्मवादः प्रतीत्यसमुत्पादवादस्य विभागः। कर्मवादानुसारं मनुष्याणां वर्तमानजीवनं पूर्वजन्मार्जितकर्मफलस्य प्रतिफलनम्।

১৬। বৌদ্ধদর্শনে কর্মবাদ কি?

উত্তর। বৌদ্ধদর্শনে কর্মবাদ হল প্রতীত্যসমুৎপাদবাদের বিভাগ। কর্মবাদ অনুসারে মানুষের বর্তমান জীবন পূর্বজন্মের অর্জিত কর্মফলের প্রতিফলন।

17. वौद्धदर्शने कर्म कतिविधम्?

उ. कर्मद्विविधम्-सकामम् निष्कामञ्च।

১৭। বৌদ্ধদর্শনে কর্ম কয় প্রকার কি কি?

উত্তর। কর্ম দ্বিবিধ-সকাম ও নিষ্কাম।

18. वौद्धाः कति विधं कर्मफलं स्वीकुर्वन्ति?

उ. वौद्धाः चतुर्विधं कर्मफलं स्वीकुर्वन्ति- (१) शुभम्, (२) अशुभम्, (३) आंशिकं शुभम्, (४) शुभाशुभभिन्नम्।

১৮। বৌদ্ধগণ কয়প্রকার কর্মফল স্বীকার করেন?

উত্তর। বৌদ্ধগণ চারপ্রকার কর্মফল স্বীকার করেন- (১) শুভ, (২) অশুভ (৩) আংশিক শুভ (৪) শুভাশুভ ভিন্ন।

19. वौद्धमतानुसारं किं कर्म शुभम्?

उ. तृष्णाविहीनं कर्म शुभम्।

১৯। বৌদ্ধমতানুসারে কি কর্ম শুভ?

উত্তর। তৃষ্ণবিহীন কর্ম শুভ কর্ম।

20. क्षणभङ्गवादः कः भवति?

उ. क्षणभङ्गवादः प्रतीत्यसमुत्पावादस्य निर्यासः। 'सर्वं क्षणिकम्' - न किञ्चित् वस्तु क्षणकालात् अधिकं स्थायी भवति।

২০। ক্ষণভঙ্গবাদ কি?

উত্তর। ক্ষণভঙ্গবাদ প্রতীত্যসমুৎপাদের নির্যাস। 'সর্বং ক্ষণিকম্' সবকিছুই ক্ষণস্থায়ী। কোনো বস্তুই এককক্ষণের বেশী স্থায়ী হয় না।

21. जीवस्य गठनविषये वौद्धमतं किमस्ति?

उ. वौद्धमतानुसारं जीवः पञ्चस्कन्धानां समन्वयेन सृष्टः।

২১। জীবের গঠন বিষেয়ে বৌদ্ধ মত কি?

উত্তর। বৌদ্ধমতানুসারে জীব পঞ্চস্কন্ধের সমন্বয়ে সৃষ্ট।

22. के च तावत् पञ्चस्कन्धाः?

उ. रूप-वेदना-संज्ञा-संस्कार-विज्ञानञ्चेति पञ्चस्कन्धः।

২২। পঞ্চস্কন্ধ কি?

উত্তর। রূপ, বেদনা, সংজ্ঞা, সংস্কার-বিজ্ঞান হল পঞ্চস্কন্ধ।

23. वौद्धदर्शनस्य शाखाद्वयम् किम्?

उ. हीनयानं महायानञ्चेति।

২৩। বৌদ্ধদর্শনের দুটি শাখা কি কি?

উত্তর। হীনযান ও মহাযান।

24. कश्च हीनयानसम्प्रदायः?

उ. रक्षणशीलः वौद्धसम्प्रदायः हीनयानसम्प्रदायभुक्तः।

২৪। হীনযান সম্প্রদায় কি?

উত্তর। রক্ষণশীল বৌদ্ধসম্প্রদায় হীনযান সম্প্রদায় ভুক্ত।

25. कः तावत् महायानसम्प्रदायः ?

उ. प्रगतिपन्थिनः संस्कारवादिनः वौद्धाः महायानसम्प्रदायभुक्ताः।

২৫। মহাযান সম্প্রদায় কি?

উত্তর। উদারপন্থী সংস্কারবাদী বৌদ্ধগণ মহাযান সম্প্রদায়ভুক্ত।

26. हीनयानसम्प्रदायस्य कौ विभागौ स्तः ?

उ. सौत्रान्तिकः वैभाषिकश्चेति द्वौ विभागौ हीनयानसम्प्रदायस्य।

২৬। হীনযান সম্প্রদায়ের বিভাগ কি কি?

উত্তর। সৌত্রান্তিক ও বৈভাষিক।

27. महायानसम्प्रदायस्य कौ विभागौ स्तः ?

उ. माध्यमिक-योगाचारश्चेति महायानसम्प्रदायस्य विभागद्वयम्।

২৭। মহাযান সম্প্রদায়ের কয়টি বিভাগ রয়েছে ও কি কি?

উত্তর। মাধ্যমিক-যোগাচার হল মহাযান সম্প্রদায়ের বিভাগ।

28. वौद्धमते प्रमाणं कति विधम् ?

उ. वौद्धमते प्रमाणं द्विविधम्- प्रत्यक्षम् अनुमानञ्चेति।

২৮। বৌদ্ধমতে প্রমাণ কয় প্রকার?

উত্তর। বৌদ্ধমতে প্রমাণ দুপ্রকার- প্রত্যক্ষ ও অনুমান।

29. 'अपोहवादः' कः भवति ?

उ. कस्मात् वस्तुनः अवाञ्छितं वस्तुपरिहारं अपोहवादः।

২৯। 'অপোহবাদ' কি?

উত্তর। কোনো বস্তু থেকে অবাঞ্ছিত বস্তুর পরিহার হল অপোহবাদ।

30. वौद्धमतानुसारं प्रत्यक्षस्वरूपं किम् अस्ति ?

उ. 'कल्पनापोढ़मभ्रान्तं प्रत्यक्षज्ञानम्'-कल्पनारहितम् अभ्रान्तज्ञ

प्रत्यक्षम्।

৩০। বৌদ্ধমতানুসারে প্রত্যক্ষ স্বরূপ কি?

উত্তর। 'কল্পনাপোঢ়মভ্রান্তং প্রত্যক্ষজ্ঞানম্' -কল্পনারহিত অভ্রান্ত জ্ঞানই প্রত্যক্ষ।

সংক্ষিপ্ত প্রশ্নোত্তর

১। বৌদ্ধধর্ম কাকে বলে?

উত্তর। কপিলাবস্তুর রাজপুত্র সিদ্ধার্থ বা গৌতম বোধিলাভের পর 'বুদ্ধ' হয়ে যে ধর্মের প্রচার করেছিলেন তাকে বৌদ্ধধর্ম বলে।

২। বুদ্ধদেব বোধিবৃক্ষ মূলে যে সত্যের সন্ধান পেয়েছিলেন তার নাম কি?

উত্তর। বুদ্ধদেব বোধিবৃক্ষমূলে যে সত্যের সন্ধান পেয়েছিলেন তার নাম 'চত্বারি আর্যসত্যানি' অর্থাৎ চারটি আর্যসত্য।

৩। বৌদ্ধমতে দুঃখ নিরোধের উপায়ের সংক্ষিপ্ত নাম কি?

উত্তর। বৌদ্ধমতে দুঃখ নিরোধের উপায়ের সংক্ষিপ্ত নাম---'অষ্টাঙ্গিক মার্গ'।

৪। বৌদ্ধদর্শন প্রধানতঃ কয়ভাগে বিভক্ত ও কি কি?

উত্তর। বৌদ্ধদর্শন প্রধানতঃ দু-ভাগে বিভক্ত---(১) হীনযান ও (২) মহাযান।

৫। প্রতীত্যসমুৎপাদটি কি?

উত্তর। বৌদ্ধদর্শনে প্রতীত্যসমুৎপাদটি হলো---কার্য-কারণতত্ত্ব। জাগতিক কার্যসমূহ কারণের উপর নির্ভর করে উৎপন্ন হয়।

৬। প্রতীত্য সমুৎপাদ কথাটির অর্থ কি?

উত্তর। প্রতীত্যসমুৎপাদ কথাটির অর্থ হলো---যথাক্রমে 'প্রতীত্য' অর্থাৎ যা কোন কিছুর অধীন এবং 'সমুৎপাদ' মানে আবির্ভাব বা উৎপত্তি হওয়া। প্রতীত্যসমুৎপাদ মতে যে কোন কার্যকারণের উপর নির্ভর করে উৎপন্ন হয় বলে একে 'কার্যকারণতত্ত্ব'-ও বলা হয়।

৭। চত্বারি আর্যসত্যানি কি কি?

উত্তর। বুদ্ধদেব কর্তৃক উপলব্ধ চারটি আর্যসত্য হলো---(১) দুঃখ আছে, (২) দুঃখের কারণ আছে, (৩) দুঃখের নিরোধ আছে এবং (৪) দুঃখ নিরোধের উপায় আছে।

৮। অষ্টাঙ্গিক মার্গ কি কি?

উত্তর। বৌদ্ধদর্শনে দুঃখ নিরোধের উপায় হলো---'অষ্টাঙ্গিক মার্গ' বা পথের অনুসরণ। যথা---(১) সম্যক্ দৃষ্টি, (২) সম্যক্ সঙ্কল্প, (৩) সম্যক্ বাক্, (৪) সম্যক্ কর্মান্ত, (৫) সম্যক্ আজীব, (৬) সম্যক্ ব্যায়াম, (৭) সম্যক্ স্মৃতি ও (৮) সম্যক্ সমাধি।

৯। বৌদ্ধমতে প্রমাণ কয় প্রকার ও কি কি?

उ. न्यायदर्शनस्य अक्षपाददर्शनम् इति परिचितम्।

২। ন্যায়দর্শনের ভিন্ন নাম কি?

উত্তর। ন্যায়দর্শন অক্ষপাদ দর্শন নামে পরিচিত।

3. न्यायदर्शनम् प्रसिद्धग्रन्थानां नामोल्लेखं कार्यम्।

उ. वात्स्यायनरचितं न्यायसूत्रम्, उदयनाचार्यस्य किरणावली न्यायकुसुमाञ्जलिश्च वाचस्पतिमिश्रस्य न्यायवार्तिकम्।

৩। ন্যায়দর্শনের প্রসিদ্ধ গ্রন্থের নামোল্লেখ কর?

উত্তর। বাৎস্যায়ন রচিত ন্যায়সূত্র, উদনাচার্যের কিরণাবলী, বাচস্পতি মিশ্রের ন্যায়বার্তিক।

4. न्यायदर्शने कति पदार्थाः स्वीकृताः?

उ. न्यायदर्शने षोड़शपदार्थाः स्वीकृताः। ते च पदार्थाः-प्रमाण-प्रमेय-संशय-प्रयोजन-दृष्टान्त-सिद्धान्तावयव-तर्क-निर्णय-वाद-जल्प-वितण्डा-हेत्वाभास-छल-जाति-निग्रहस्थानानि च।

৪। ন্যায়দর্শনে কয়টি পদার্থ স্বীকৃত?

উত্তর। ন্যায়দর্শনে ষোলটি পদার্থ স্বীকৃত। -প্রমাণ, প্রমেয়, সংশয়, প্রয়োজন, দৃষ্টান্ত, সিদ্ধান্তাবয়ব, তর্ক, নির্ণয়, বাদ, জল্প, বিতণ্ডা, হেত্বাভাস, ছল, জাতি, নিগ্রহস্থান।

5. न्यायदर्शने प्रमाणं कतिविधम्?

उ. न्यायदर्शने प्रमाणं चतुर्विधम्-प्रत्यक्षम्, अनुमानम्, उपमानम्,शव्दश्चेति।

৫। ন্যায়দর্শনে প্রমাণ কয়টি?

উত্তর। ন্যায়দর্শনে প্রমাণ চারটি-প্রত্যক্ষ, অনুমান, উপমান ও শব্দ।

6. प्रत्यक्षसंज्ञा का भवति?

उ. 'इन्द्रियार्थसन्निकर्षजन्यं ज्ञानं प्रत्यक्षम्'।

৬। প্রত্যক্ষ সংজ্ঞা কি?

উত্তর। ইন্দ্রিয়ার্থ সন্নিকর্ষজন্যং জ্ঞানং প্রত্যক্ষম্।

7. प्रत्यक्षं कति विधम्?

उ. प्रत्यक्षं द्विविधम्-लौकिकम् अलौकिकञ्चेति।

৭। প্রত্যক্ষ কয়টি?

উত্তর। প্রত্যক্ষ দু প্রকার- লৌকিক ও অলৌকিক।

8. लौकिकप्रत्यक्षं कतिविधम्?

उ. लौकिकं प्रत्यक्षं द्विविधम्-वाह्यप्रत्यक्षं मानसप्रत्यक्षञ्चेति।

৮। লৌকিক প্রত্যক্ষ কয় প্রকার?

উত্তর। লৌকিক প্রত্যক্ষ দু প্রকার- বাহ্যিক প্রত্যক্ষ ও মানস প্রত্যক্ষ।

9. अलौकिक प्रत्यक्षं कतिविधम्?

उ. अलौकिकं प्रत्यक्षं त्रिविधम्-सामान्यलक्षणं ज्ञानलक्षणं योगजश्चेति।

৯। অলৌকিক প্রত্যক্ষ কয়প্রকার?

উত্তর। অলৌকিক প্রত্যক্ষ তিন প্রকার- সামান্যলক্ষণ, জ্ঞানলক্ষণ ও যোগজলক্ষণ।

10. योगजप्रत्यक्षं किम्?

उ. योगगाभ्यासकारणात् योगिषु शक्तिविशेषः उत्पद्यते, यया योगिनः सर्वज्ञाः भवन्ति। अथ सर्वज्ञानां योगिणां उपलब्धिः योगजप्रत्यक्षम्।

১০। যোগজ প্রত্যক্ষ কি?

উত্তর। যোগাভ্যাসের ফলে যোগীদের মধ্যে এক বিশেষ শক্তি উৎপন্ন হয়, তখন তারা সর্বজ্ঞ হন। এই সর্বজ্ঞ যোগীদের উপলব্ধিই হল যোগজ প্রত্যক্ষ।

11. योगजप्रत्यक्षं कति विधम?

उ. योगजप्रत्यक्षं द्विविधम्-युक्तप्रत्यक्षम्, यञ्जानप्रत्यक्षञ्च।

১১। যোগজপ্রত্যক্ষ কয় প্রকার?

উত্তর। যোগজপ্রত্যক্ষ দুই প্রকার-যুক্তপ্রত্যক্ষ ও যুঞ্জানপ্রত্যক্ষ।

12. दृष्टिभेदात् प्रत्यक्षं पुनः कतिविधम्?

उ. दृष्टिभेदात् प्रत्यक्षं पुनःद्विविधम्-सविकल्पप्रत्यक्षम्, निर्विकल्पप्रत्यक्षञ्चेति।

১২। দৃষ্টিভেদে প্রত্যক্ষ পুনরায় কয়প্রকার?

উত্তর। দৃষ্টিভেদে প্রত্যক্ষ পুনরায় দুপ্রকার- সবিকল্পপ্রত্যক্ষ, নির্বিকল্পপ্রত্যক্ষ।

13. किं तावत् निर्विकल्पत्यक्षम्?

उ. 'निष्प्रकारकं ज्ञानं निर्विकल्पकम्'।

১৩। নির্বিকল্পপ্রত্যক্ষ কি?

উত্তর। নিষ্প্রকারকং জ্ঞানং নির্বিকল্পকম্।

14. किं तावत् सविकल्पप्रत्यक्षम्?

उ. 'सम्प्रकारकं ज्ञानं सविकल्पकम्।'

১৪। সবিকল্পপ্রত্যক্ষ কি?

উত্তর। সম্প্রকারকং জ্ঞানং সবিকল্পকম্।

15. का तावत् 'प्रत्यभिज्ञा'?

उ. निर्विकल्पकं सविकल्पकं भिन्नं ज्ञानं प्रत्यभिज्ञा। पूर्वपरिचितं ज्ञानं प्रत्यभिज्ञा।

১৫। প্রত্যভিজ্ঞা কি?

উত্তর। নির্বিকল্প ও সবিকল্প ভিন্ন জ্ঞান হল প্রত্যভিজ্ঞা। পূর্বপরিচিত জ্ঞান প্রত্যভিজ্ঞা।

16. अनुमानप्रमाणं किम्?

उ. अनुमिति करणम् अनुमानम्।

১৬। অনুমান প্রমাণ কি?

উত্তর। অনুমিতি করণম্ অনুমানম্।

17. न्यायशव्दस्य कोऽर्थः?

उ. नीयते अनेन इति न्यायः। येन उपायेन निश्चितः सिद्धान्तः जायते सः न्यायः।

১৭। ন্যায়শব্দের অর্থ কি?

উত্তর। 'নীয়তে অনেন ইতি ন্যায়ম্' যে উপয়ের দ্বারা নিশ্চিত সিদ্ধান্ত জানা যায় তাই ন্যায়।

18. अनुमानं कतिविधम्?

उ. अनुमानं द्विविधम्- स्वार्थानुमानम् परार्थानुमानश्चेति।

১৮। অনুমান কত প্রকারের ও কি কি?

উত্তর। অনুমান দু প্রকার- স্বার্থানুমান, পরার্থানুমান।

उ. वैशेषिकदर्शनस्य मुख्यग्रन्थः 'वैशेषिकसूत्रम्'।

২। বৈশেষিক দর্শনের মুখ্য গ্রন্থ কি?

উত্তর। বৈশেষিকসূত্রম্।

3. 'वैशेषिक' इति नामकरणं कथं जातम्?

उ. 'विशेषः' पदार्थरूपेण स्वीकृतत्वात् कणाददर्शनं वैशेषिकदर्शनमिति ख्यातम्।

৩। 'বৈশেষিক' এই নামকরণের কারণ কি?

উত্তর। 'বিশেষ' পদার্থ স্বীকরণ হেতু কণাদ দর্শন বৈশেষিক দর্শন নামে অভিহিত।

4. वैशेषिकदर्शनस्य भिन्ननाम किमस्ति?

उ. वैशेषिकदर्शनस्य भिन्ननाम 'औलूक्यदर्शनम्'।

৪। বৈশেষিক দর্শনের ভিন্ন নাম কি?

উত্তর। ঔলূক্যদর্শন।

5. वैशेषिकसूत्रसंख्याः कतिविधाः?

उ. दशमाध्याये विभक्ताः वैशेषिकसूत्रसंख्या ३७०।

৫। বৈশেষিক সূত্র সংখ্যা কত?

উত্তর। দশ অধ্যায়ে বিভিক্ত বৈশেষিক সূত্রে ৩৭০ টি সূত্র রয়েছে।

6. वैशेषिकदर्शनस्य प्राचीनतमभाष्यं किमासीत्।

उ. अधुना अनुपलब्धं 'रावणभाष्यम्', 'भारद्वाजवृत्तिश्च' वैशेषिकदर्शनस्य प्राचीनतमं भाष्यम्।

৬। বৈশেষিক দর্শনের প্রাচীনতম ভাষ্য কি?

উত্তর। রাবণভাষ্য, ভারদ্বাজবৃত্তি বৈশেষিক দর্শনের প্রাচীনতম ভাষ্য।

7. अधुना उपलब्धं प्राचीनं वैशेषिकभाष्यं किम्?

उ. आचार्यप्रशस्तपादेन विरचितं 'पदार्थधर्मसंग्रहः' वैशेषिकदर्शनस्य सुप्राचीनं भाष्यम्।

৭। বর্তমানে প্রাপ্ত বৈশেষিক ভাষ্য কি?

উত্তর। আচার্য প্রশস্তপাদরচিত 'পদার্থধর্মসংগ্রহ'।

8. वैशेषिकदर्शने कति पदार्था स्वीकृताः?

उ. वैशेषिकदर्शने सप्तपदार्थाः स्वीकृताः।

৮। বৈশেষিক দর্শনে কয়টি পদার্থ স্বীকৃত?

উত্তর। বৈশেষিক দর্শনে সপ্ত পদার্থ স্বীকৃত।

9. वैशेषिकदर्शने के च पदार्थाः स्वीकृताः?

उ. द्रव्रगुणकर्मसामान्यबिशेषसमवायाभावाः सप्तपदार्थाः।

৯। বৈশেষিকসম্মত সপ্তপদার্থ কি কি?

উত্তর। দ্রব্য, গুণ, কর্ম, সামান্য, বিশেষ, সমবায় ও অভাব।

10. वैशेषिकदर्शने प्रमाणं कतिविधम्?

उ. प्रमाणं द्विविधम्- प्रत्यक्षम् अनुमानञ्चेति।

১০। বৈশেষিক স্বীকৃত প্রমাণ কয়টি ও কি কি?

উত্তর। দুটি -প্রত্যক্ষ ও অনুমান।

11. वैशेषिके अनुमानं कतिविधम्?

उ. अनुमानं द्विविधम्-स्वर्थानुमानम्, परार्थानुमानञ्च।

১১। বৈশেষিক অনুমান কতপ্রকার ও কি কি?

উত্তর। দুপ্রকার-স্বার্থানুমান ও পরার্থানুমান।

12. वैशेषिके परार्थानुमानस्य कतिविभागाः?

उ. परार्थानुमानं त्रिधा भवति- केवलान्वयी, केवलव्यतिरेकी, अन्वयव्यतिरेकी च।

১২। বৈশেষিক দর্শনে পরার্থানুমান কতপ্রকার ও কি কি?

উত্তর। তিন প্রকার- কেবলান্বয়ী, কেবল ব্যতিরেকী ও অন্বয়ব্যতিরেকী।

13. के च तावद् भावपदार्थाः?

उ. द्रव्यगुणकर्मसामान्यविशेषसमवायाः षट्भावपदार्थाः।

১৩। ভাবপদার্থ কয়টি ও কি কি?

উত্তর। ভাব পদার্থ ছয়টি- দ্রব্য, গুণ, কর্ম, সামান্য, বিশেষ ও সমবায়।

14. कश्च अभावः?

उ. भावभिन्नत्वम् अभाववत्वम्।

১৪। 'অভাব' কি?

উত্তর। 'ভাবভিন্নত্বম্ অভাবত্বম্' -যা অস্তিত্বহীন তাই অভাব।

15. किं तावद् द्रव्यलक्षणम्?

उ. 'क्रियागुणवत् समवायिकारणं द्रव्यलक्षणम्।

১৫। দ্রব্য কি?

উত্তর। ক্রিয়া -গুণবান্-সমবায়ীকারণ দ্রব্য- 'ক্রিয়াগুণবৎ সমবায়িকারণমিতি দ্রব্যলক্ষণম্'।

16. द्रव्यं कतिविधम्?

उ. द्रव्यं नवसंख्यकम्।

১৬। দ্রব্য কত প্রকারের?

উত্তর। দ্রব্য নয়প্রকারের।

17. नबद्रव्याणि कानि भवन्ति?

उ. पृथिव्यप्तेजवाय्वाकाशकालदिगात्मामनांसि नवद्रव्याणि।

১৭। নয়টি দ্রব্য কি কি?

উত্তর। পৃথিবী, অপ, তেজ, বায়ু, আকাশ, কাল, দিক্ আত্মা ও মন।

18. कानि तावद् नित्यद्रव्याणि?

उ. आकाश-काल-दिग्-आत्मा-मनांसि नित्यद्रव्याणि। एतद्व्यतीतं पृथिवी-अप् -तेज-वायूनां परमाणुरूपाणि अपि नित्यद्रव्याणि।

১৮। নিত্যদ্রব্য কি কি?

উত্তর। আকাশ, কাল, দিক্, আত্মা ও মন নিত্যদ্রব্য। তা ছাড়া পৃথিবী, অপ, তেজ ও বায়ুর পরমানুরূপসমূহ নিত্য।

19. पृथिवीलक्षणम् लिख्यताम्।

उ. रूपरसगन्धस्पर्शवती पृथिवी।

১৯। পৃথিবীর লক্ষণ কি?

উত্তর। রূপরসগন্ধস্পর্শরতী পৃথিবী।

20. अप्लक्षणं किम्?

उ. 'रूपरसस्पर्शवत्यापो द्रवा स्निग्धा'।

২০। অপ্ (জলের) এর লক্ষণ কি?

উত্তর। রূপ, রস ও স্পর্শবত্তা লক্ষণ বিশিষ্ট অপ্। ইহা দ্রবণ ও স্নিগ্ধতাসম্পন্ন।

21. तेजलक्षणं किम्?

उ. उष्णास्पर्शवत् तेजः।

২১। তেজের লক্ষণ কি?

উত্তর। রূপ ও স্পর্শবত্তাযুক্ত হল তেজ।

22. वायुलक्षणं लिख्यताम्?

उ. रूपरहितस्पर्शवान् वायुः।

২২। বায়ু কি?

উত্তর। বায়ু রূপরহিত ও স্পর্শবত্তাবিশিষ্ট।

23. आकाशं किम्?

उ. शव्दगुणकम् आकाशम्।

২৩। আকাশ কি?

উত্তর। শব্দগুণবিশিষ্ট দ্রব্য আকাশ।

24. कालस्य लक्षणं दीयताम्?

उ. अतीतादिव्यवहारः कालः। सर्वाधारः कालः।

২৪। কালের লক্ষণ কি?

উত্তর। 'সার্বাধারঃ কালঃ' -বিশ্বপ্রপঞ্চের আধার কাল।

25. आत्मा किम्?

उ. 'ज्ञानाधिकरणमात्मा'।

২৫। আত্মা কি?

উত্তর। আত্মা জ্ঞানের অধিকরণ।

26. मनः किम्?

उ. सुखाद्युपलब्धिसाधनमिन्द्रियं मनः। मनरन्तरेन्द्रियः।

২৬। মন কি?

ও অন্যোন্যাভাব। সংসর্গাভাব আবার তিনভাগে বিভক্ত---প্রাগভাব, ধ্বংসাভাব এবং অত্যন্তাভাব।

১২। 'ভূতলে ঘটনাই'---এক্ষেত্রে যে অভাব লক্ষিত হয়---তার নাম লেখ।

উত্তর। 'ভূতলে ঘটনাই' বললে ভূতলটি ঘটাভাববিশিষ্টরূপে অভাবের প্রত্যক্ষ জ্ঞান হয়। এক্ষেত্রে অভাবটি প্রাগভাবের অন্তর্গত।

১৩। বৈশেষিক দর্শনে অভাব বলতে কি বোঝায়?

উত্তর। বৈশেষিক দর্শনে অভাব হলো নঞর্থক পদার্থ, যার কোন অস্তিত্ব নাই। অতএব ভাবভিন্ন পদার্থই অভাব। জ্ঞানের বিষয় সর্বদাই জ্ঞানাতিরিক্ত বলে স্বীকৃত। অভাবজ্ঞানের বিষয় রূপে স্বীকৃত 'অভাব' পদার্থ স্বাভাবিকভাবে স্বীকৃত হয়। ভূতলে ঘট নাই, বায়ুতে রূপ নাই ইত্যাদি অভাব জ্ঞানের বিষয়রূপে 'অভাব' নামক পদার্থ অর্থাৎ অভাবের জ্ঞানাতিরিক্ত সত্তা অবশ্যই স্বীকার্য। এইটি অভাব।

১৪। বৈশেষিক মতে বিশেষের কোন জাতি থাকে না কেন?

উত্তর। বৈশেষিক মতে নিত্যদ্রব্যের ভেদক ধর্মকে 'বিশেষ' বলে। নিত্যদ্রব্যসমূহের পারস্পরিক ভেদের জন্য বিশেষ স্বীকৃত হলেও বিশেষগুলির পারস্পরিক ভেদের জন্য অন্য বিশেষ স্বীকারের প্রয়োজন নাই। একমাত্র বিশেষই বিশেষের ভেদক। তাই বহুর মধ্যে একের প্রতীতির জন্য যে সামান্য বা জাতি স্বীকার করা হয়, বিশেষের ক্ষেত্রে সেই সামান্য বা জাতি স্বীকার করা হয় না।

১৫। বৈশেষিক মতে 'তমস্' কোন পদার্থের অন্তর্ভুক্ত?

উত্তর। বৈশেষিক মতে 'তমস্' অভাব পদার্থের অন্তর্গত।

১৬। বৈশেষিক মতে 'ঘটো ভবিষ্যতি'---এক্ষেত্রে যে অভাব বর্ত্তমান---তার নাম লেখ।

উত্তর। 'ঘটোভবিষ্যতি' অর্থাৎ ঘট হবে---এই অভাবটির নাম প্রাগভাব।

১৭। বৈশেষিক দর্শনে কয়টি ও কি কি পদার্থ স্বীকৃত?

উত্তর। বৈশেষিক দর্শনে সাতটি পদার্থ স্বীকৃত। যথা---দ্রব্য, গুণ, কর্ম, সামান্য, বিশেষ সমবায় ও অভাব।

১৮। বৈশেষিক দর্শন স্বীকৃত নিত্যদ্রব্য কোনগুলো?

উত্তর। বৈশেষিক দর্শন স্বীকৃত নিত্যদ্রব্যসমূহ হলো---পৃথিবী পরমাণু, জলীয় পরমাণু, তেজঃপরমাণু, বায়বীয় পরমাণু, দিক্, কাল, আকাশ, মন ও আত্মা।

১৯। বৈশেষিক দর্শনে ঈশ্বরের ভূমিকা কি?

উত্তর। বৈশেষিক দর্শনে জগৎকর্ত্তারূপে ঈশ্বর স্বীকৃত। ঈশ্বর জগতের মূল উপাদান পরমাণু সংযোগ ঘটিয়ে দ্ব্যণুক, ত্রসরেণুক্রমে জীবের অদৃষ্ট বা কর্মফলানুযায়ী জগৎ সৃষ্টি করেন।

6. सांख्यदर्शनस्य मुख्याः भाष्यग्रन्थाः उल्लेखणीयाः।

उ. सांख्यदर्शनस्य मुख्यभाष्यग्रन्थेषु अन्यतमाः-गौड़पादेन रचितं 'सांख्यकारिकाभाष्यम्' वाचस्पतिमिश्रस्य 'तत्त्वकौमुदी' विज्ञानभिक्षुसम्पादितं 'सांख्यप्रवचनभाष्यम्, सांख्यसारञ्च।

7. सांख्यदर्शनं किं प्रकृतिकम्?

उ. सांख्यदर्शनम् द्वैतवादीदर्शनम्। अस्य दर्शनस्य मूलतत्त्वं पुरुषप्रकृतितत्त्वम्।

8. सांख्यदर्शनुसारं सम्यकज्ञानं कथं लभ्यते?

उ. प्रकृतिपुरुषयोः भेदज्ञानात् सम्यक्ज्ञानं लभ्यते।

9. सांख्यदर्शनस्य मूलवक्तव्यं किमस्ति?

उ. पुरुषप्रकृतितत्त्वस्य सम्यकज्ञानात् दुःखत्रयात् मुक्तः सन् कैवल्यप्राप्तिः सांख्यदर्शनस्य मूलवक्तव्यम्।

10. दुःखं कतिविधम्?

उ. दुःखं त्रिविधम्-आध्यात्मिकं आधिभौतिकं आधिदैविकञ्च।

11. किञ्च आध्यात्मिकं दुःखम्?

उ. आत्मानं अधि-अध्यात्मम्। शरीरकेन्द्रिकं दुःखम् आध्यात्मिकं दुःखम्।

12. अधिभौतिकं दुःखं किमस्ति?

उ. भूतजातं कीटदंशनादिकम् आधिभौतिकं दुःखम्।

13. आधिदैविकं दुःखं किम्?

उ. दैवजातं झञ्झाप्लावणादिकं आधिदैविकं दुःखम्।

14. सांख्यस्वीकृतानि तत्त्वानि कतिसंख्यकानि?

उ. सांख्यस्वीकृतानि तत्त्वानि पञ्चविंशति संख्यकानि।

15. पञ्चविंशतिसांख्यतत्त्वानि कानि भवन्ति।

उ. मूलप्रकृतिरविकृति महदाद्यः प्रकृतिविकृतयः सप्त।
षोड़शकस्तु विकारो न प्रकृतिर्नविकृतिः पुरुषः।। (सांख्यकारिका-

३)।

16. सांख्योक्तः पुरुषः कीदृशः?

उ. न प्रकृतिर्न विकृतिः पुरुषः-पुरुषसङ्गात् प्रकृतिः विकृतिः भवति। ततः महादाद्यानां सृष्टिः। सा प्रकृतिः त्रिगुणात्मिका।

17. सांख्योक्तानि प्रकृतिविकृतितत्त्वानि कानि भवन्ति?

उ. महत्, अहङ्कारः पञ्चतन्मात्राणिा (शव्द-स्पर्श-रूप-रस-गन्धश्च)सप्ततत्त्वानि प्रकृतिविकृतिततत्त्वानि।

18. विकृतितत्त्वानि कानि?

उ. पञ्चज्ञानेन्द्रियानि (चक्षु-कर्ण-जिह्वा-नासिका-त्वक् च), पञ्चकर्मेन्द्रियानि (वाक्-पाणि-पाद-पायु-उपस्थश्च) मनः, पञ्चमहाभूतः (क्षिति-अप्-तेज-मरुत्-व्योमन् च) षोड़शतत्त्वानि विकृततत्त्वानि।

19. सांख्यदर्शने ईस्वरस्य स्थानं किमस्ति?

उ. सांख्यदर्शनं निरीश्वरवादीदर्शनम्। प्रकृतिपुरुषयोः विवेकज्ञानात् कैवल्यं लभ्यते। अथ मुक्तिदातारूपिणः ईश्वरस्य अस्तित्वं सांख्यदर्शने अस्वीकृतम्।

20. सांख्योक्तः सत्कार्यवादः कः भवति?

उ. उत्पत्तेः पूर्वं कार्यं कारणे सद्रूपे विराजते। सः एव सत्कार्यवादः।

21. सांख्यदर्शने कति प्रमाणं स्वीकृतम्?

उ. सांख्यदर्शने प्रमाणत्रयं स्वीकृतम्-प्रत्यक्षम्, अनुमानं शव्दश्च।

22. सांख्यदृशा पुरुषस्य वन्धनदशा का भवति?

उ. सांख्योक्तः पुरुषः चैतन्यस्वरूपः। किन्तु सत्त्वोद्रेकात् जलचन्द्र इव मनसि चैतन्यं प्रतिविम्वितं भवति। चैतन्यपुरुषः तदा मनसि प्रतिविम्वितं विषयं आत्मस्वरूपं चिन्तयति। इयं हि पुरुषम्य वन्धनदशा।

23. पुरुषस्य मुक्तिः कथं जायते?

उ. पञ्चविंशतितत्त्वज्ञानात् योगाभ्यासाच्च प्रकृतिपुरुषयो भेदज्ञानात् पुरुषः स्वरूपे स्थितः भवति। इयं हि पुरुषम्य मुक्तिदशा।

24. सत्कार्यवादविषये सांख्यानां वक्तव्यं किमस्ति?

उ. ईश्वपकृष्णाचार्येण उक्तम्-

असदकरणादुपादानग्रहणात् सर्वसम्भवाभावात्।
शक्तस्य शक्यकरणात् कारणभावाच्च सत्कार्यम्।। (कारिका-९)

25. प्रकृतेः अस्तित्वविषये सांख्यानां वक्तव्यं किमस्ति?

उ. भेदानां परिमाणात् समन्वयात् शक्तितः प्रवृत्तेश्च।
कारणकार्यविभागात् अविभागाद्वैश्वरूपस्य ।।(सांख्यकारिका-१५)।

26. गुणत्रयं किमस्ति?

उ. सत्त्बं रजः तमस्-इति गुणत्रयम्।

27. सत्त्वगुणं कीदृशम्?

उ. सत्त्वं लघु प्रकाशकमिष्टमुपष्टम्भकम्।

28. रजोगुणं कीदृशम्?

उ. चलञ्च रजः-रजोगुणं चञ्चलतापूर्णम्।

29. तमोगुणं कीदृशम्?

उ. गुरुवरणकमेव तमः। तमो आवरकशक्तिरूपम्।

30. पुरुषस्य अस्तित्वविषये सांख्यानां प्रमाणं किमस्ति?

उ. सङ्घातपरार्थत्वात् त्रिगुणादिविपर्ययादधिष्ठानात्।
पुरुषोऽस्ति भोक्तृभावात् कैवल्यार्थं प्रवत्तेश्च।। (कारिका-१७)

31. प्रत्यक्षप्रमाणं सांख्यदृशा केन नाम्ना अभिहितम्?

उ. प्रत्यक्षप्रमाणं सांख्यदृशा 'दृष्टप्रमाणम्' इत्यभिधीयते।

32. सांख्यदृशा अनुमानं कतिविधम्?

उ. सांख्यदृशा अनुमानं त्रिविधम्-पूर्ववत्, शेषवत्, सामान्यतोदृष्टम्।

33. सांख्यानां तृतीय प्रमाणं किम्?

उ. 'आप्तवचनं सांख्यानां तृतीयप्रमाणम्। आप्तः श्रुतिः। आप्तवचनं

৫। সাংখ্যদর্শনের মুখ্য আচার্যগণ কে কে?

উত্তর। মহর্ষিকপিল, কপিলশিষ্য আসুরি, আসুরিশিষ্য পঞ্চশিখাচার্য প্রমুখ।

৬। সাংখ্যদর্শনের অধুনা উপলব্ধ গ্রন্থ কোনটি?

উত্তর। আচার্য ঈশ্বরকৃষ্ণরচিত সাংখ্যকারিকা।

৭। সাংখ্যদর্শনের মুখ্যভাষ্য গ্রন্থ কি কি?

উত্তর। আচার্যগৌড়পাদ বিরচিত 'সাংখ্যকারিকাভাষ্য', বাচস্পতিমিশ্রের 'তত্ত্বকৌমুদী', বিজ্ঞানভিক্ষুর সাংখ্যপ্রবচন ভাষ্য ও সাংখ্যসার।

৮। সাংখ্যদর্শন কোন প্রকৃতির দর্শন?

উত্তর। বেদস্বতন্ত্র সাংখ্যদর্শন দ্বৈতবাদী।

৯। সাংখ্যদর্শনের মুখ্য তত্ত্বদুটি কি কি?

উত্তর। পুরুষ ও প্রকৃতি।

১০। সাংখ্যমতে সম্যক্জ্ঞান কিভাবে সিদ্ধ হয়?

উত্তর। প্রকৃতি-পুরুষের ভেদজ্ঞানহেতু সম্যক্জ্ঞান লব্ধ হয়।

১১। সাংখ্যস্বীকৃত তত্ত্বসংখ্যা কত?

উত্তর। পঞ্চবিংশতি।

১২। সাংখ্যদর্শনের মূল বক্তব্য কি?

উত্তর। পঞ্চবিংশতিতত্ত্বের সম্যক্জ্ঞানহেতু ত্রিবিধ দুঃখমুক্ত হয়ে কৈবল্যপ্রাপ্তিই সাংখ্যদ্শর্নের মূল বক্তব্য।

১৩। দুঃখ কি?

উত্তর। অপ্রিয়সংযোগই দুঃখ।

১৪। দুঃখ কত প্রকার ও কি কি?

উত্তর। তিন প্রকার-আধ্যাত্মিক, অধিভৌতিক ও আধিদৈবিক।

১৫। আধ্যাত্মিক দুঃখ কি?

উত্তর। শরীরকেন্দ্রিক দুঃখ আধ্যাত্মিক দুঃখ। যেমন-রোগব্যাধি।

১৬। আধিভৌতিক দুঃখ কি?

উত্তর। পশু, কীটপতঙ্গাদিজাত দুঃখ আধিভৌতিক দুঃখ।

১৭। আধিদৈবিক দুঃখ কি

উত্তর। দৈবজাত-বন্যা, খরা প্রভৃতি দুঃখ আধিদৈবিক দুঃখ।

১৮। সাংখ্যস্বীকৃত তত্ত্বসংখ্যা কত?

উত্তর। পঞ্চবিংশতি।

১৯। সাংখ্যের মূলতত্ত্ব কয়টি ও কি কি?

উত্তর। দুটি -পুরুষ ও প্রকৃতি।

২০। পঞ্চমহাভূত কি কি?

উত্তর। ক্ষিতি, অপ্, তেজ, মরুৎ ও ব্যোম্।

২১। পঞ্চ তন্মাত্র কি কি?

উত্তর। শব্দ, স্পর্শ, রূপ, রস ও গন্ধ।

২২। পঞ্চজ্ঞানেন্দ্রিয় কি কি?

উত্তর। চক্ষু, কর্ণ, জিহ্বা, নাসিকা ও ত্বক।

২৩। পঞ্চ কর্মেন্দ্রিয় কি কি?

উত্তর। বাক্, পাণি, পাদ, পায়ু ও উপস্থ।

২৪। সাংখ্যোক্ত প্রকৃতি কি?

উত্তর। মূলা প্রকৃতি অবিকৃত। পুরুষসঙ্গে প্রকৃতি বিকার প্রাপ্ত হয়। তখন প্রকৃতি ত্রিগুণাত্মিকা।

২৫। সাংখ্যের প্রকৃতি-বিকৃতি তত্ত্বগুলি কি কি?

উত্তর। মহৎ, অহঙ্কার ও পঞ্চতন্মাত্র-এই সাতটি তত্ত্ব প্রকৃতি-বিকৃতি।

২৬। বিকৃতিতত্ত্বগুলি কি কি?

উত্তর। পঞ্চজ্ঞানেন্দ্রিয়, পঞ্চকর্মেন্দ্রিয়, পঞ্চমহাভূত ও মন- এই ষোলটি তত্ত্ব বিকৃতিতত্ত্ব।

২৭। সাংখ্যদর্শনে ঈশ্বরের স্থান কি?

উত্তর। সাংখ্যদর্শন নিরীশ্বরবাদী।

২৮। সৎকার্যবাদ কি?

উত্তর। উৎপত্তির পূর্বে কার্য কারণে বিদ্যমান থাকে।

২৯। সাংখ্যদর্শনে কয়টি প্রমাণ স্বীকৃত?

উত্তর। তিনটি- প্রত্যক্ষ, অনুমান ও শব্দ।

৩০। সাংখ্যমতে পুরুষের বন্ধনদশা কি?

উত্তর। সাংখ্যোক্ত পুরুষ চৈতন্যস্বরূপ। কিন্তু সত্ত্বগুণের প্রভাবে জলে চন্দ্রবিম্বের মতো মনে চৈতন্যের প্রতিবিম্বনে তাকে পুরুষআত্মস্বরূপ বলে চিন্তা করে। ইহাই পুরুষের

বন্ধনদশা।

৩১। পুরুষের মুক্তি কিভাবে সম্ভব?

উত্তর। পঞ্চবিংশতি তত্ত্বজ্ঞানহেতু এবং যোগাভ্যাসের দ্বারা প্রকৃতি-পুরুষের ভেদজ্ঞান স্পষ্ট হলে পুরুষ স্বরূপে স্থিত হয়। ইহাই পুরুষের মুক্তিদশা।

৩২। সৎকার্যবাদ বিষয়ে সাংখ্যদের বক্তব্য কি?

উত্তর। 'অসদকরণাদুপাদানগ্রহণাৎ সর্বসম্ভবাভাবাৎ।
শক্তস্য শক্যকরণাৎ সমন্বয়াৎ শক্তিতঃ প্রবৃত্তেশ্চ।।

৩৩। গুণত্রয় কি?

উত্তর। সত্ত্ব, রজঃ ও তম- এই তিনটি গুণ।

৩৪। সত্ত্বগুণ কি?

উত্তর। সত্ত্বগুণ লঘুপ্রকাশক ও ইষ্ট উপষ্টম্ভক।

৩৫। রজোগুণ কি?

উত্তর। 'চলঞ্চ রজঃ' -রজোগুণ কর্মোদ্দীপক।

৩৬। তমোগুণ কি?

উত্তর। 'গুরুবরণকমেব তমঃ' -তমোগুণ আবরক শক্তি।

৩৭। পুরুষের অস্তিত্ব বিষয়ে সাংখ্যদের বক্তব্য কি?

উত্তর। 'সঙ্ঘাতপরার্থত্বাৎ ত্রিগুণাদিবিপর্যয়াদধিষ্ঠানাৎ।
পুরুষোঽস্তি ভোক্তৃভাবাৎ কৈবল্যার্থং প্রবৃত্তেশ্চ'।। (সা.কা-১৭)

৩৮। প্রত্যক্ষপ্রমাণকে সাংখ্যগণ কোন্ নামে অভিহিত করেন?

উত্তর। দৃষ্টপ্রমাণ।

৩৯। সাংখ্যমতে অনুমান কতপ্রকারের ও কি কি?

উত্তর। তিন প্রকার-পূর্ববৎ, শেষবৎ ও সামান্যতদৃষ্ট।

৪০। সাংখ্যদের তৃতীয় প্রমাণ কি?

উত্তর। শব্দপ্রমাণ।

৪১। আপ্তবচন কি?

উত্তর। শ্রুতিবাক্যই আপ্তবচন।

৪২। সাংখ্যমতে অন্তঃকরণ কতপ্রকারের?

উত্তর। তিন প্রকারের-মন, বুদ্ধি ও অহঙ্কার।

৪৩। সাংখ্যমতে পুরুষ এক না অনেক?

উত্তর। পুরুষ অনেক।

৪৪। পুরুষের বহুত্ববিষয়ে সাংখ্যসিদ্ধান্ত কি?

উত্তর। জন্মমরণকরণানাং প্রতিনিয়মাদযুগপৎ প্রবৃত্তেশ্চ।

পুরুষবহুত্বং সিদ্ধং ত্রৈগুণ্যবিপর্যয়াচ্চৈব।। (সা . কা-১৮)

৪৫। দৃষ্টপ্রমাণ কি?

উত্তর। পঞ্চজ্ঞানেন্দ্রিলভ্য জ্ঞান দৃষ্টপ্রমাণ- 'প্রতিবিষয়াধ্যবসায়ো দৃষ্টম্'।

৪৬। আনুশ্রবিক শব্দের অর্থ কি?

উত্তর। বেদোক্ত যাগযজ্ঞাদি কর্মানুষ্ঠান আনুশ্রবিককর্ম।

৪৭। 'সাংখ্যকারিকা' গ্রন্থের রচয়িতা কে?

উত্তর। আচার্য ঈশ্বরকৃষ্ণ।

৪৮। সাংখ্যকারিকা গ্রন্থ কোন ছন্দে রচিত?

উত্তর। আর্যাছন্দে।

৪৯। সাংখ্যানুসারে মুক্তি কতপ্রকার ও কি কি?

উত্তর। মুক্তি দুপ্রকারের -জীবন্মুক্তি ও বিদেহমুক্তি।

৫০। প্রকৃতির প্রথম অভিব্যক্তি কি?

উত্তর। মহৎ তথা বুদ্ধি-মহদাখ্যমাঘং কার্যম্।

৫১। মহৎ থেকে কোন তত্ত্ব সৃষ্টি হয়?

উত্তর। অহঙ্কার।

৫২। সাংখ্যশাস্ত্রে 'সৃষ্টি' কি নামে অভিহিত?

উত্তর। সর্গ।

৫৩। সৃষ্টি বা সর্গ কত প্রকারের ও কি কি?

উত্তর। দু প্রকারের -প্রত্যয়সর্গ ও তন্মাত্রসর্গ।

৫৪। প্রত্যয় সর্গান্তর্গত তত্ত্বগুলি কি কি?

উত্তর। বুদ্ধি, অহঙ্কার, মন, পঞ্চকর্মেন্দ্রিয় প্রত্যয়সর্গান্তর্গত।

৫৫। তন্মাত্রকোন্ কোন্ তত্ত্ব?

উত্তর। পঞ্চ তন্মাত্র ও পঞ্চমহাভূত।

योगदर्शनम्

लघूत्तरीयाः प्रश्नाः

1. योगदर्शनस्य प्रवक्ता कः आसीत्?

उ. महर्षिः पतञ्जलिः योगदर्शनस्य प्रवक्ता।

১। যোগদর্শনের প্রবক্তা কে?

উত্তর। মহর্ষি পতঞ্জলি।

2. योगदर्शन्सय मूलग्रन्थः कः आसीत्?

उ. महर्षिना पतञ्जलिना विरचितं 'योगसूत्रम्' योगदर्शनस्य मूलग्रन्थः।

২। যোগদর্শনের মূল গ্রন্থ কি?

উত্তর। মহর্ষি পতঞ্জলি প্রণীত যোগসূত্র।

3. योगदर्शनम् अन्यत् केन नाम्ना परिचितम्?

उ. योगदर्शनम् पातञ्जलदर्शनम् इति नाम्नाऽपि परिचितम्।

৩। যোগদর্শনের ভিন্ননাম কি?

উত্তর। পাতঞ্জল দর্শন।

4. योगदर्शनस्य भाष्यग्रन्थाः के भवति?

उ. वेदव्यासेन विरचितं 'व्यासभाष्यम्' वाचस्पतिमिश्रस्य 'तत्त्ववैशारदी', विज्ञानभिक्षुविरचितं योगवार्तिकम् इत्यादयः योगदर्शनस्य भाष्यग्रन्थाः।

৪। যোগদর্শনের ভাষ্যগ্রন্থ কি কি?

উত্তর। বেদব্যাস বিরচিত -ব্যাসভায্য, বাচস্পতি মিশ্রের তত্ত্ববৈশারদী এবং বিজ্ঞান ভিক্ষুর যোগবার্তিক।

5. सांख्यदर्शनेन सह योगदर्शनस्य मुख्यं सम्पर्कं किमस्ति?

उ. सांख्यदर्शनम् योगदर्शनम् च उभे समानतन्त्रम्।

৫। সাংখ্য ও যোগদর্শনের সম্পর্ক কি?

উত্তর। সাংখ্য ও যোগ -উভয় দর্শনই সংমানতন্ত্র

6. सांख्यदर्शनेन सह योगदर्शनस्य मुख्यं विभेदं किमस्ति?

उ. सांख्यदर्शनम् निरीश्वरवादी योगदर्शनम् ईश्वरवादी।

৬। সাংখ্য ও যোগদর্শনের মুখ্য প্রভেদ কি?

উত্তর। সাংখ্য নিরীশ্বরবাদী, যোগদর্শন ঈশ্বরবাদী।

7. 'सेश्वरसांख्यम्' इत्यभिधा योगदर्शनं प्रति कथं प्रयुक्तम्?

उ. योगदर्शनम् सांख्यानुसारी। किन्तु योगदर्शने 'ईश्वरतत्त्वम्' स्वीकृतम्। अथ योगदर्शनम् 'सेश्वरसांख्यम्' इत्यभिधीयते।

৭। 'সেশ্বর সাংখ্য' কোন দর্শন? যোগদর্শনকে সেশ্বর সাংখ্য বলা হয় কেন?

উত্তর। যোগদর্শন সাংখ্যানুসারী হলেও ঈশ্বর বিশ্বাস করে। তাই যোগগর্শন সেশ্বর সাংখ্য নামে অভহিত।

8. योगदर्शने तत्त्वसंख्या का अस्ति?

उ. सांख्यदर्शनस्य पञ्चविंशतितत्वैः सह योगदर्शनम् ईश्वरतत्त्व स्वीकरोति। अथ योगदर्शनस्य तत्त्वसंख्या षड़विंशतिः।

৮। যোগদর্শনের তত্ত্বসংখ্যা কত?

উত্তর। সাংখ্যের পঞ্চবিংশতি তত্ত্বের সাথে ঈশ্বর নিয়ে সর্বমোট ২৬।

9. योगशव्दस्य कोऽर्थः?

उ. योगश्चित्तवृत्तिनिरोधः। चित्तवृत्तिनाम् अन्तर्मुखीकरणं हि योगः।

৯। যোগশব্দের অর্থ কি?

উত্তর। চিত্তবৃত্তিনিরোধই যোগ- 'যোগশ্চিত্তবৃত্তিনিরোধ'।

10. योगसूत्रस्य कति पादाः सन्ति?

उ. योगसूत्रस्य चत्वारः पादाः सन्ति-समाधिपादः, साधनपादः, विभूतिपादः, कैवल्यपादश्च।

১০। যোগসূত্রের কয়টি ও কি কি বিভাগ?

উত্তর। চারটি-সমাধিপাদ, সাধনপাদ, বিভূতিপাদ ও কৈবল্যপাদ।

11. चित्तं किम्?

उ. वुद्धि-अहङ्कार-मनस्-इति तत्त्वत्रयं हि चित्तम्।

১১। চিত্ত কি?

উত্তর। বুদ্ধি, অহঙ্কার ও মন-এই তিনটি তত্ত্ব একত্রে চিত্ত নামে অভিহিত।

12. चित्तवृत्तिः कतिविधा भवति?

उ. चित्तवृत्तिः पञ्चधा भवति-प्रमाण-विपर्यय-विकल्प-निद्रा-स्मृतयः।

১২। চিত্তের বৃত্তি কত প্রকারের ও কি কি?

উত্তর। পাঁচ প্রকারের -প্রমাণ, বিপর্যয়, বিকল্প, নিদ্রা ও স্মৃতি।

13. योगोक्तं प्रमाणलक्षणं किमस्ति?

उ. अविसम्वादिज्ञानं प्रमाणम्।

১৩। যোগোক্ত প্রমাণ লক্ষণ কি?

উত্তর। অবিসম্বাদি জ্ঞানই প্রমাণ।

14. प्रमाणं कतिविधम्?

उ. प्रत्यक्षानुमानागमाः प्रमाणानि-प्रत्यक्षम् अनुमानम् आगमः इति।

১৪। যোগমতে প্রমাণ কত প্রকারের ও কি কি?

উত্তর। তিন প্রকারের -প্রত্যক্ষ, অনুমান ও আগম।

15. विपर्ययः कः भवति?

उ. 'विपर्ययो मिथ्याज्ञानमतद्रूपप्रतिष्ठम्'।

১৫। বিপর্যয় কি?

উত্তর। মিথ্যাজ্ঞান বিপর্যয়।

16. विकल्पश्च कः भवति?

उ. शव्दज्ञानानुपाती वस्तुशून्यो विकल्पः'।

১৬। বিকল্প কি?

উত্তর। 'শব্দজ্ঞানানুপাতী বস্তুশূন্যো বিকল্পঃ'।

17. निद्रा का भवति?

उ. सुषुप्तिकालीना वृत्तिः निद्रा-'अभाव-प्रत्ययालम्वनावृत्तिर्निद्रा'।

১৭। নিদ্রা কি?

উত্তর। সুষুপ্তিকালীন বৃত্তি নিদ্রা।

18. योगोक्ता स्मृतिः का भवति?

उ. विषयानुभूतसंस्कारोत्पन्नं ज्ञानं स्मृतिः–'अनुभूत विषयःअसम्प्रमोषः स्मृतिः।

১৮। স্মৃতি কি?

উত্তর। বিষয়ানুভূত সংস্কার থেকে উৎপন্ন জ্ঞান স্মৃতি।

19. चित्तवृत्तिनिरोधः कथं सम्भवति?

उ. अभ्यासेन वैराग्येन च चित्तवृत्तिनिरोधः भवति।

১৯। চিত্তবৃত্তিনিরোধ কিভাবে সম্ভব?

উত্তর। অভ্যাস ও বৈরাগ্যের দ্বারা।

20. चित्तभूमिः का भवति?

उ. सत्त्वः–रजः–तमो इति त्रिगुणप्रभावात् चित्तस्य स्तरभेदः जायते। चित्तस्य अयं स्तरभेदः हि चित्तभूमिः।

২০। চিত্তভূমি কি?

উত্তর। সত্ত্ব-রজঃ-তমোগুণের প্রভাবে চিত্তের বিভিন্ন স্তরভেদ ঘটে। ইহাই চিত্তভূমি।

21. चित्तभूमिः कतिविधः भवति?

उ. चित्तभूमिः पञ्चविधः भवति–क्षिप्त–मूढ़–विक्षिप्त–एकाग्र–विरुद्धश्चेति।

২১। চিত্তভূমি কত প্রকারের? কি কি?

উত্তর। চিত্তভূমি পাঁচ প্রকারের- ক্ষিপ্ত, মূঢ়, বিক্ষিপ্ত, একাগ্র ও নিরুদ্ধ।

22. योगदर्शनोक्तम् ईश्वरस्वरूपं किम्?

उ. क्लेश–कर्म–विपाकशयैरपरामृष्टः पुरुषविशेषः ईश्वरः।

২২। যোগদর্শনে ঈশ্বরের স্বরূপ কি?

উত্তর। ক্লেশ-কর্ম-বিপাক প্রভৃতির দ্বারা যিনি অপরামৃষ্ট তিনিই ঈশ্বর।

23. ईश्वरस्य वाचकः कः भवति?

उ. ईश्वरस्य वाचकः भवति प्रणवः।

24. चित्तवृत्तिः का भवति?

उ. इन्द्रियमाध्यमेन वस्तुसायुज्यं प्राप्य चित्तं तत्तदाकारं प्राप्नोति। चित्तस्य एवमाकारप्राप्तिः हि चित्तवृत्तिः।

২৪। চিত্তবৃত্তি কি?

উত্তর। ইন্দ্রিয়ের দ্বারা বস্তুসাযুজ্য লাভ করে চিত্ত সেই সেই আকার প্রাপ্ত হয়। চিত্তের এই আকারপ্রাপ্তিই চিত্তবৃত্তি।

25. विवेकख्यातिः का भवति?

उ. पुनर्जन्मेत्यादीनां दुःखानाम् अत्यन्ताभावोपायः विवेकख्यातिः।

২৫। বিবেকখ্যাতি কি?

উত্তর। পুনর্জন্ম প্রভৃতি দুঃখের অত্যন্তাভাবের উপায় বিবেকখ্যাতি।

26. योगाङ्गः कतिविधः?

उ. योगाङ्गः अष्टविधः भवति?

২৬। যোগাঙ্গ কত প্রকার?

উত্তর। যোগাঙ্গ আট প্রকার।

27. कश्च योगाङ्गः?

उ. यमनियमासनप्राणायामप्रत्याहारधारणाध्यानसमाधयोऽष्टाङ्गानि।

২৭। যোগাঙ্গগুলি কি কি?

উত্তর। যম, নিয়ম, আসন, প্রাণায়াম, প্রত্যাহার, ধারণা, ধ্যান ও সমাধি।

28. यमः कः भवति?

उ. अहिंसासत्यास्तेयव्रह्मचर्यापरिग्रहाः यमाः।

২৮। যম কি?

উত্তর। অহিংসা, সত্য, অস্তেয়, ব্রহ্মচর্য ও অপরিগ্রহ হল যম।

29. अहिंसा का भवति?

उ. कायेन-मनसा-वाचा हिंसात्यागम् अहिंसा। 'अहिंसाप्रतिष्ठायां तत् सन्निधौ वैरत्यागः।

২৯। অহিংসা কি?

উত্তর। কায়মনোবাক্যে হিংসা ত্যাগই অহিংসা। বৈরীতা ত্যাগই অহিংসা।

30. ब्रह्मचर्यं किम्?

उ. कर्मणा-मनसा-वाचा सर्वावस्थासु सर्वदा।

सर्वत्र मैथुनत्यागी ब्रह्मचर्यं प्रचक्षते।।

৩০। ব্রহ্মচর্য কি?

উত্তর। কায়মনোবাক্যে মৈথুনবাসনা ত্যাগ হলো ব্রহ্মচর্য।

31. आसनं किम्?

उ. स्थिरसुखमासनम्। निश्चलभावेन सुखपूर्वकमुपवेशनं आसनम्।

৩১। আসন কি?

উত্তর। 'স্থিরসুখমাসনম্' -নিশ্চলভাবে সুখপূর্বক উপবেশন আসন।

32. प्राणायामः कः भवति?

उ. आसनसिद्धेः परं श्वासप्रश्वासयोर्गतिविच्छेदः प्रणायामः।

৩২। প্রাণায়াম কি?

উত্তর। আসোনোপবিষ্ট হয়ে শ্বাস-প্রশ্বাসের গতি নিয়ন্ত্রণ প্রাণায়াম।

33. प्राणायामस्य कति भेदाः सन्ति?

उ. प्राणायामस्य त्रिविधभेदाः सन्ति-वाह्यवृत्तिः आभ्यन्तरवृत्तिः स्तम्भवृत्तिश्च।

৩৩। প্রাণায়াম কত প্রকারের ও কি কি?

উত্তর। প্রাণায়াম তিন প্রকারের- বাহ্যবৃত্তি, আভ্যন্তরবৃত্তি ও স্তম্ভবৃত্তি।

34. ध्यानं किमस्ति?

उ. 'तत्र प्रत्ययैकता ध्यानम्' ध्येयवस्तुनि चित्तस्य एकाग्रता ध्यानम्।

৩৪। ধ্যান কি?

উত্তর। ধ্যেয়বস্তুতে চিত্তের একাগ্রতা ধ্যান।

35. समाधिः कः भवति?

उ. 'तदेवार्थमात्रनिर्भासंस्वरूपशून्यमिव समाधिः'- गभीरे निमग्ने ध्याने चित्तं ध्येयाकारे परिणते सति समाधिः भवति।

৩৫। সমাধি কি?

উত্তর। গভীরধ্যানে চিত্ত যখন ধ্যেয়াকারে পরিণতি লাভ করে তখন সমাধি হয়।

36. समाधिः कतिविधः भवति?

उ. समाधिः द्विविधः-सम्प्रज्ञात समाधिः असम्प्रज्ञात समाधिश्च।

৩৬। সমাধি কয়প্রকার?

উত্তর। সমাধি দুপ্রকারের- সম্প্রজ্ঞাত সমাধি ও অসম্প্রজ্ঞাত সমাধি।

37. कैवल्यं किमस्ति?

उ. कैवल्यं खलु आत्मस्वरूपताप्राप्तिः।

৩৭। কৈবল্য কি?

উত্তর। আত্মাস্বরূপতা প্রাপ্তি হল কৈবল্য।

38. कैवल्यप्राप्तिः कथं सम्पद्यते?

उ. तद्वैराग्यादपि दोषवीजक्षये कैवल्यम्-वैराग्यप्रभावात् दोषवीजक्षये कैवल्यप्राप्तिः भवति।

৩৮। কৈবল্যপ্রাপ্তি কি করে সম্ভব?

উত্তর। বৈরাগ্যের প্রভাবে দোষবীজক্ষয়ে কৈবল্যপ্রাপ্তি ঘটে।

39. चित्तप्रसादनं कथं सम्पद्यते?

उ. मैत्री-करुणा-मुदिता-उपेक्षा प्रभृतीनां भावनायाः चित्तप्रसादनं सम्पद्यते।

৩৯। চিত্তের প্রসন্নতা কি ভাবে সম্পাদিত হয়।

উত্তর। মৈত্রী, করুণা, মুদিতা, উপেক্ষা প্রভৃতি ভাবনার দ্বারা চিত্তের প্রসন্নতা সম্পাদিত হয়।

40. प्रज्ञा का?

उ. प्रकृष्टज्ञानं प्रज्ञा।

৪০। প্রজ্ঞা কি?

উত্তর। প্রকৃষ্ট জ্ঞান প্রজ্ঞা।

41. प्रज्ञा कदा ऋतम्भरा भवति?

उ. निर्विचारवैशारद्ये प्रज्ञा ऋतम्भरा भवति।

৪১। প্রজ্ঞা কখন ঋতম্ভরা হয়?

উত্তর। নির্বিচার বৈশারদ্যে প্রজ্ঞা ঋতম্ভরা হয়।

করে না। কেবলমাত্র দেবতাদের অস্তিত্ব রক্ষা হয়, তাও আবার সম্প্রদানে চতুর্থী বিভক্তি হওয়ার খাতিরে। দেবাতারা বৈদিক প্রয়োজন সাধন করে মাত্র। যে মন্ত্রে যে দেবতার আহ্বান করা হয় সেই মন্ত্রকেই সেই দেবতা বলে স্বীকার করা হয়। মীমাংসা দর্শনে মন্ত্রের অতিরিক্ত কোন শরীরী দেবতা নাই। বস্তুতঃ মীমাংসা দর্শনে বেদই ঈশ্বরের স্থান দখল করেছে।

मीनांसादर्शनम्

लघूत्तरीयाः प्रश्नाः

1. मीमांसादर्शनस्य प्रवक्ता कः आसीत्?

उ. मीमांसादर्शनस्य प्रवक्ता महर्षिः जैमिनिः।

১। মীমাংসা দর্শনের প্রবক্তা কে?

উত্তর। মহর্ষি জৈমিনি।

2. मीमांसादर्शनस्य मुख्यग्रन्थः कःअस्ति?

उ. मीमांसादर्शनस्य मुख्यग्रन्थः 'मीमांसा सूत्रम्'।

২। মীমাংসা দর্শনের মুখ্যগ্রন্থ কি?

উত্তর। মীমাংসাসূত্রম্।

3. मीमांसादर्शनस्य प्रधानभाष्यकार कः आसीत्?

उ. आचार्यः शवरस्वामी मीमांसादर्शनस्य प्रधानभाष्यकारः आसीत्?

৩। মীমাংসাসূত্রে প্রধান ভাষ্যকার কে?

উত্তর। আচার্য শবরস্বামী।

4. शवरस्वामीसम्पादितस्य मीमांसाभाष्यस्य किं नाम?

उ. शावरभाष्यम्।

৪। শবরস্বামী সম্পাদিত ভাষ্যের নাম কি?

উত্তর। শাবরভায্য।

5. 'मीमांसा' शव्दस्य कोऽर्थः?

उ. मान् + सन् + अ + टाप् प्रत्यय निष्पण्णस्य मीमांसाशव्दस्य अर्थः निष्पत्तिः। विरोधं परिहृत्य वेदवाक्यस्य महत्वं प्रतिपादनमेव मीमांसादर्शनस्य मूलम्।

৫। 'মীমাংসা' শব্দের অর্থ কি?

উত্তর। মান্ সন্ অ টাপ প্রত্যয় নিষ্পন্ন মীমাংসাশব্দের অর্থ নিষ্পত্তি। বিরোধ পরিহার করে বেদবাক্যের মহত্ব প্রতিষ্ঠাই মীমাংসা দর্শনের মুখ্য বিষয়।

6. मीमांसादर्शनस्य उत्सः कोऽस्ति?

उ. वेदस्य कर्मकाण्डम्।

৬। মীমাংসা দর্শনের উৎস কি?

উত্তর। বেদের কর্মকাণ্ড।

7. मीमांसादर्शनस्य भिन्ननामानि कानि?

उ. अध्वरमीमांसा, धर्ममीमांसा, पूर्वमीमांसा-प्रभृतीनि मीमांसादर्शनस्य भिन्ननामानि।

৭। মীমাংসা দর্শনের ভিন্ন নাম কি?

উত্তর। অধ্বরমীমাংসা, ধর্মমীমাংসা, পূর্বমীমাংসা।

8. मीमांसादर्शनस्य सूत्रसंख्या का अस्ति?

उ. मीमांसादर्शने षष्ठीपदेषु २७४४ संख्यकानि सूत्राणि सन्ति।

৮। মীমাংসা দর্শনের সূত্রসংখ্যা কত?

উত্তর। ছয়টি পাদে মীমাংসাসূত্রসংখ্যা ২৭৪৪।

9. मीमांसादर्शनस्य प्रधानभाष्यकारौ कौ स्तः?

उ. आचार्यः प्रभाकरमिश्रः आचार्यः कुमारिल भट्टश्च।

৯। মীমাংসা দর্শনের প্রধান দুজন ভাষ্যকার কে কে?

উত্তর। আচার্য প্রভাকর মিশ্র, আচার্য কুমারিল ভট্ট।

10. शवरभाष्यस्य प्रस्थानत्रयं किमस्ति?

उ. भाट्टप्रस्थानम्, गुरुप्रस्थानम्, मिश्रप्रस्थानञ्च।

১০। শবরভাষ্যের কয়টি ও কি কি প্রস্থান?

উত্তর। তিনটি প্রস্থান-ভাট্টপ্রস্থান, গুরুপ্রস্থান ও মিশ্রপ্রস্থান।

11. भाट्टप्रस्थानस्य प्रवक्ता कः आसीत्?

उ. आचार्यः कुमारिल भट्टः भाट्टप्रस्थानस्य प्रवक्ता।

১১। ভাট্টপ্রস্থানের প্রবক্তা কে?

উত্তর। আচার্য কুমারিল ভট্ট।

12. गुरुप्रस्थानस्य प्रवक्ता कः आसीत्?

उ. आचार्यः प्रभाकर मिश्रः।

১২। গুরু প্রস্থানের প্রবক্তা কে?

উত্তর। আচার্য প্রভাকর মিশ্র।

13. मिश्रप्रस्थानस्य प्रवक्ता कः आसीत्?

उ. आचार्यः मुरारि मिश्रः।

১৩। মিশ্রপ্রস্থানের প্রবক্তা কে?

উত্তর। আচার্য মুরারি মিশ্র।

14. शवरभाष्यमवलम्व्य प्रभाकारमिश्रेण सम्पादिता टीका का अस्ति?

उ. प्रभाकरमिश्रेण टीकाद्वयं सम्पादितम्-वृहती लघ्वी च।

১৪। শবরভাষ্যানুসারে রচিত প্রভাকর মিশ্রের টীকার নাম কি?

উত্তর। দুটি টীকা-বৃহতী ও লঘ্বী ।

15. कुमालिभट्टाचार्येण सम्पादिता टीका का अस्ति?

उ. कुमालिभट्टचार्येन टीकात्रयं विरचितम्-श्लोकवार्तिकम्, तन्त्रवार्तिकम्, टुप्टीका च।

১৫। কুমারিলভট্টের টীকা কয়টি ও কি কি?

উত্তর। তিনটি টীকা- শ্লোকবার্তিক, তন্ত্রবার্তিক ও টুপ্ টীকা।

16. मीमांसादर्शनस्य परवती प्रसिद्धग्रन्थेषु केचिद् उल्लेख्यताम्।

उ. पार्थसारथिमिश्रेण सम्पादिता 'शास्त्रदीपिका' मण्डनमिश्रस्य 'विधिविवेकः', माधवचार्यस्य 'न्यायमाला', नारायणभट्टस्य 'मानमेयोदयः' इत्यादयः।

১৬। মীমাংসা দর্শনের পরবর্তী টীকা গুলি কি কি?

উত্তর। পার্থসারথিমিশ্রের 'শাস্ত্রদীপিকা', মণ্ডনমিশ্রের 'বিধিবিবেক', মাধবাচার্যের 'ন্যায়মালা' এবং নারায়ণ ভট্টের 'মানমেয়োদয়'।